खण्ड-07 सत्र-05 / अंक-66

शनिवार 09 मार्च, 2024 / 19 फाल्गुन, 1945 (शक)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्यमेव जयते

सातवीं विधान सभा

पाँचवां सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड-07 सत्र-05 में अंक 50 से अंक 70 तक सम्मिलित हैं)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

राज कुमार

सचिव

RAJ KUMAR

Secretary

महेन्द्र गुप्ता

उप-सचिव (सम्पादन)

MAHENDRA GUPTA

Deputy Secretary (Editing)

विषय सूची

सत्र-5 शनिवार, 9 मार्च, 2024/19 फाल्गुन, 1945 (शक) अंक-66

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	1-2
2.	सदन में अव्यवस्था	4-5
3.	जलापूर्ति एवं सीवेज रख-रखाव से संबंधित शिकायतों पर चर्चा	6-40
4.	सदन में अव्यवस्था	41
5.	सदन पटल पर प्रस्तुत कागज़ात	42
6.	वार्षिक बजट (2024-25) पर चर्चा	43-88
7.	अनुदानों की मांगें (2024-25)	89-95
8.	दिल्ली विनियोजन (संख्या-2) विधेयक, 2024 प्रस्तुतिकरण, विचार एवं पारण	96-97

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-5 शनिवार, 9 मार्च, 2024/19 फाल्गुन, 1945 (शक) अंक-66

दिल्ली विधान सभा

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए:

1. श्री अजेश यादव
2. श्रीमती ए. धनवंती चंदीला ए.
3. श्री अब्दुल रहमान
4. सुश्री भावना गौड
5. श्री बी. एस. जून
6. श्री धर्मपाल लाकड़ा
7. श्री दिनेश मोहनिया
8. श्री हाजी युनूस
9. श्री जय भगवान
10. श्री जरनैल सिंह
11. श्री प्रवीण कुमार
12. श्रीमती प्रमिला धीरज टोकस
13. श्री राजेश गुप्ता
14. श्री राजेन्द्र पाल गौतम
15. श्री रोहित कुमार
16. श्री संजीव झा
17. श्री सोमदत्त
18. श्री शिव चरण गोयल
19. श्री एक. के. बग्गा
20. श्री सुरेंद्र कुमार

21. श्री अखिलेशपति त्रिपाठी
22. श्री अभय वर्मा
23. श्री अजय कुमार महावर
24. श्री जितेंद्र महाजन
25. श्री महेन्द्र यादव
26. श्री मदन लाल
27. श्री मोहन सिंह बिष्ट
28. श्री नरेश यादव
29. श्री ओम प्रकाश शर्मा
30. श्री पवन शर्मा
31. श्री प्रलाद सिंह साहनी
32. श्री ऋतुराज गोविंद
33. श्री विजेंद्र गुप्ता

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-5 शनिवार, 9 मार्च, 2024/19 फाल्गुन, 1945 (शक) अंक-66

दिल्ली विधान सभा

सदन 11.20 बजे समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हुए।

माननीय अध्यक्षः सभी माननीय सदस्यगणों का आज के इस सत्र में हार्दिक स्वागत है, 280. आज हमारे माननीय सदस्य जरनैल सिंह जी का जन्मदिन है वो हालांकि अनुपस्थित हैं, उनको हार्दिक शुभकामनायें, बहुत बहुत बधाई। 280 आज मेरे पास कुछ माननीय सदस्यों के पत्र आये हैं श्री नरेश यादव जी, प्रवीन कुमार जी, प्रलाद सिंह साहनी जी, आर.के. पुरम से प्रमिला जी, ये एक गंभीर समस्या है जिससे दिल्ली की जनता बड़ी परेशान है इसलिये आज मैं 280 जिनके भी नंबर हैं, उनके नाम बोल रहा हूं वो पढ़े हुए माने जायें श्री शिव चरण गोयल जी, श्रीमती प्रमिला धीरज टोकस, श्री सुरेंद्र कुमार जी, श्रीमान अभय वर्मा जी, श्री राजेश ऋषि जी, मदन लाल जी, अजय महावर जी, राजेंद्र पाल गौतम जी, अनिल कुमार वाजपेयी जी, विजेंद्र कुमार गुप्ता जी। ये सारे पढ़े हुए माने जायें।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः एक तो आराम से बात करो, गुस्से में बात मत करो, आंखें दिखा के बात मत करो। आंखें दिखा के बात मत करो।

श्री विजेंद्र गुप्ताः आंखें नीची कर लेता हूं।

माननीय अध्यक्षः तरीके से बात करिये। तरीके से बात करिये। सत्रह दिन बाहर रहने के बाद भी आपको समझ नहीं आया कि सदन में कैसे चला जाता है, 17 दिन हाउस से बाहर रहने के बाद भी आपको समझ नहीं आया।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः नहीं, मैं ये 280 पढ़े हुए मान रहा हूं। मैंने बोला है पढ़े हुए माने जायें, ये तो आप सोचिये कब मौका मिलेगा। ये तो आप सोचिये खुद। हाईकोर्ट गये थे हाईकोर्ट ने 17 दिन बाद दिया, आये हैं आज, बैठें।

श्री विजेंद्र गुप्ताः नहीं नहीं आप जो हैं, जो कुछकर रहे हैं आप, आपको कोर्ट का कोई...

माननीय अध्यक्षः मेरे पास जो समस्या है, मेरे पास जो समस्या है वो बड़ी गंभीर समस्या है। दिल्ली की जनता सीवेज, गंदे पानी से बहुत परेशान है, जलबोर्ड के काम नहीं हो रहे, हाई कोर्ट के ऑर्डर के बाद कुछ ठेकेदारों की पेमेंट्स नहीं हुई हैं और इस विषय पर सभी विधायकों के यहां जलबोर्ड की परेशानियां चल रही हैं, पानी गंदा आ रहा है,

सीवर बाहर बह रहे हैं। मैं अपनी विधान सभा की भी बात करूं तो वर्क ऑर्डर हुए 6-6 महीने हो गये काम शुरू नहीं हुआ है। ठेकेदार नये कामों के लिये टेंडर में पार्टिस्पिेट नहीं कर रहे हैं। उनकी पिछली पेमेंट रूकी हुई है। कई माननीय सदस्यों ने इस पर चर्चा मांगी है, मैं उसको अलाउ कर रहा हूं। सबसे पहले श्री अब्दुल रहमान जी अपनी बात रखेंगे।

श्री अब्दुल रहमानः नमस्कार अध्यक्ष महोदय। अध्यक्ष महोदय मैं अपनी बात रखूं उससे पहले एक बड़ा गंभीर मुद्‌दे पर कुछ बोलना चाहता हूं उस पर आपकी अनुमति चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय, कल दिल्ली के इंदरलोक के अंदर।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः हां तो बोलिये न, मैं मना कब कर रहा हूं। आप विपक्ष से नाम दे दीजिये मुझे।

श्री अब्दुल रहमानः अध्यक्ष महोदय, कल दिल्ली के इंद्रलोक इलाके में जुम्मे की नमाज अदा कर रहे लोगों पर पुलिस ने आकर लातें बजाई, उनको ठोकरें मारी, इस बर्बरता के लिये शंकर कुमार, सब इंस्पेक्टर सराय रोहिल्ला थाना का सब इंस्पेक्टर खाली उसे सस्पेंड कर दिया गया, अध्यक्ष महोदय मैं कहना चाहता हूं कि उस पर गंभीर धाराओं में मुकदमा चलना चाहिये। किसी भी धर्म का कोई पूजा कर रहा हो, कोई अरदास कर रहा हो, या कोई नमाज पढ़ रहा हो किसी पूजा में, नमाज में आकर लात बजाना, ठोकरें मारना, बिल्कुल गलत है,

एकदम सरासर गलत है सर। ऐसे व्यक्ति को बर्खास्त करना चाहिये और उसके खिलाफ मुकदमा चलाना चाहिये।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः भई ऐसे काम नहीं चलेगा। देखिये ऐसे काम नहीं चलेगा। मैं नाम बोल रहा हूं नाम आने पर अपनी बात रखें। सभी खड़े होंगे। राजेश जी बैठिये। माननीय, देखिये।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं प्रार्थना कर रहा हूं माननीय सदस्यों से, नहीं मैं ऐसे अलाउ नहीं करूंगा। आप बैठिये, तुरंत बैठिये प्लीज।

श्री अब्दुल रहमानः अध्यक्ष महोदय, मैं जलबोर्ड को लेकर सीलमपुर विधान सभा की बात कर रहा हूं। सर मेरे यहां पर सीवर की लाईन 1995 में डली और सर सीमेंटिड लाइन डली चूंकि आबादी वहां बहुत कम थी, 1993 में जब पहला इलेक्शन दिल्ली विधान सभा का हुआ तो मात्र 37 हजार वोट सीलमपुर विधान सभा में थे जबकि आज दो लाख वोट वहां हैं यानि कि साढे 5 गुना आबादी हो गयी। सर बहुत छोटी छोटी लाइन जो जगह जगह बैठ गयी है, सीवर ओवरफ्लो हैं, न उस लाइन बदलने के लिये कोई बजट मिल रहा है, लोग परेशान हैं, 50 पचास, सौ-सौ की तादात में लोग इकट्ठा होकर मेरे ऑफिस आते हैं। अध्यक्ष महोदय, लेबर पहले 20 लेबर सैंक्शन थी उसके बाद फिर 15 लेबर सैंक्शन की गयी और अब उनको घटाकर 9 लेबर सैंक्शन की गयी हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं बताना चाहता हूं कि हर महीने

जो जलबोर्ड की अपनी लेबर है, कोई न कोई रिटायर हो जाता है और लेबर जलबोर्ड से दी नहीं जा रही है। अध्यक्ष महोदय, काम किस प्रकार होंगे। अध्यक्ष महोदय, मैं एक और चीज आपको बताना चाहता हूं 10 गाड़ियां सीलमपुर विधान सभा में थीं जिनमें से दो गाड़ियां हटा ली गयी, एक चार हजार लीटर सीवर मशीन और दूसरी एक ऑटोडिसिल्टर हटा दिया गया जिसकी वजह से काम बिल्कुल नहीं हो पा रहे। अध्यक्ष महोदय, जगह जगह मैनहोल भरे हुए हैं, जगह जगह सीवर ओवरफ्लो हैं, जिसकी वजह से पीने का पानी भी हर जगह गंदा आ रहा है। अध्यक्ष महोदय, इन सीवर की लाईनों को डालने के लिये अध्यक्ष महोदय, जहां-जहां लाईनें बैठी हुई हैं, मल्टीपल लोकेशन का टेंडर कराने के लिये इसके लिये बजट दिया जाये ताकि सुचारू रूप से काम हो सके। अध्यक्ष महोदय, पहले जहां एक से दो कंप्लेंट, तीन कंप्लेंट पूरी विधान सभा से आती थी, आज 80-80, सत्तर-सत्तर कंप्लेंट रोजाना विधान सभा से आ रही हैं अध्यक्ष महोदय, ऑफिस में बैठना दूभर है। आखिर कब तक ये चलेगा और कैसे दिल्ली के काम होंगे। अध्यक्ष महोदय क्या कसूर है दिल्ली के लोगों का और दिल्ली सरकार का कि दिल्ली सरकार चाह रही है, दिल्ली के लोग परेशान हैं, उसके बाद अधिकारी किसी काम को करने के लिये तैयार नहीं हैं। अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से कहना चाहूंगा कि जल्द से जल्द इन कामों को पूरा करने के लिये बजट दिलाया जाये और अध्यक्ष महोदय, पूरी लाइन को और तमाम सीवर के मैनहोलों को डिसिल्ट कराने के ऑर्डर तुरंत किये जायें। धन्यवाद बहुत-बहुत शुक्रिया।

माननीय अध्यक्षः श्री राजेश गुप्ता जी।

श्री राजेश गुप्ताः धन्यवाद अध्यक्ष जी, आपने इस गंभीर विषय पर बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष जी मेरे यहां पर वजीर पुर इंडस्ट्रियल एरिया है जिसके अंदर इस वक्त पानी की बहुत ज्यादा समस्या है। नई लाइन डालनी है और बहुत ही गंदा पानी लोगों के घर पर आ रहा है। ऐसे ही वजीर पुर जे.जे. कालोनी जिसके अंदर माननीय मंत्री जी भी का भी दौरा हुआ था और वहां पर पानी की लाइन डालनी है, पानी नहीं पहुंच पा रहा, उसपर भी काम रूका हुआ है। केशवपुरम के अंदर ए-वन ब्लॉक है पूरे के पूरे सीवर भरे रहते हैं, रोज समस्या आ रही है, रोज करवानी पड़ रही है, उसमें लाइन चेंज होनी है। इसी तरीके से अलग अलग जगह पर कई जगह सीवर की डिसिल्टिंग होनी है जिस पर काम रूका हुआ है क्योंकि फिलहाल लेबर नहीं है या है तो वो बहुत कम है। मैं आपके माध्यम से ये कहना चाहता हूं कि जो भी इसका तरीका अपनाया जाये क्योंकि ये ऐसा काम है जिसके अंदर वेट नहीं किया जा सकता। तो आप प्लीज इसके ऊपर कुछ संज्ञान लें, विधान सभा ले और इस काम को कराये, आपने मुझे मौका दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः श्री हाजी युनूस जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः साहनी जी ये नोटिस मुझे सुबह मिले हैं, आज ही मिले हैं मॉर्निंग में, इसलिये उनको सूचना नहीं दी जा सकी।

श्री हाजी युनूसः धन्यवाद अध्यक्ष महोदय।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः कर रहे हैं अभी बात कर रहे हैं।

श्री हाजी युनूसः इतने महत्वपूर्ण मुद्दे पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष महोदय, पूरी दुनिया में हर मजहब में पानी पिलाना ये बहुत बड़े पुण्य का काम है। लोग इसके लिये कुएं लगाते थे, प्याऊ बनवाते थे, और लोगों को पानी पिलाया करते थे वो काम दिल्ली में अगर किसी ने करा तो माननीय श्री अरविंद केजरीवाल जी ने इस सपने को साकार करा। अध्यक्ष जी, आज मैं समझता हूं ये मेरी विधान सभा का नहीं, पूरी दिल्ली की समस्या है। अध्यक्ष जी, मेरी विधान सभा में कई कालोनियों में अरविंद केजरीवाल जी की क्रांतिकारी विकास नीतियों के तहत जो काम चल रहे थे आज वो विकास कार्य रूके हुए हैं। अध्यक्ष जी, सीवर के काम रूके हुए हैं, पानी की लाइनों के काम रूके हुए हैं, उसकी वजह से कालोनियों के जो सड़क बनने के काम हैं वो भी रूके हुए हैं। मेरे बाबू नगर में, बृजपुरी में, दयाल पुर में, जी एंड एच ब्लॉक में, नेहरू विहार में, पानी की लाइनें इतनी पुरानी हैं कि सारे विधान सभा की अक्सर कॉलोनियों में गंदा पानी आ रहा है। सीवर ओवरफ्लो हो रहे हैं, सीवर की वजह से ओवरफ्लो होने की वजह से लोगों के घरों में पानी आना शुरू हो गया है अध्यक्ष जी। लाइन नहीं बदल पा रहे हैं, सीवर नहीं ठीक कर पा रहे हैं, उनको डिसिल्ट नहीं कर पा रहे। अध्यक्ष जी, नई लाइन जहां डलनी है

जिसकी वजह से कॉलोनियों के विकास कार्य रूके हुए हैं वो लाइन भी नहीं डल पा रही हैं। अध्यक्ष जी, बहुत बड़ी समस्या है। 2019 तक मेरी विधान सभा में मात्र 95 किलोमीटर के करीब पानी की लाइन थी।

माननीय अध्यक्षः राजेश जी, बैठिये।

श्री हाजी युनूसः आज माननीय अरविंद केजरीवाल की वजह से।

माननीय अध्यक्षः नहीं बैठ जाईये प्लीज।

श्री हाजी युनूसः दिल्ली सरकार की वजह से 195 किलोमीटर के लगभग पानी की लाइन हैलेकिन उसके बावजूद गंदा पानी आ रहा है, पानी नहीं है। इमरजेंसी में जितने भी ये जलबोर्ड से रिलेटिड काम हैं इनको कराना मुश्किल हो रहा है। पिछले साल से मेरी कॉलोनियों के बहुत से काम रूके हुए हैं। अध्यक्ष जी, मेरी आपके माध्यम से यही अनुरोध, यही रिक्वेस्ट है कि मेरी विधान सभा में जो ये काम रूके हुए हैं एक-एक, डेढ-डेढ साल हो गये हैं जलबोर्ड के, अध्यक्ष जी इनको तुरंत कराया जाये जिससे वहां की जनता के जो दूसरे सड़क वगैरह बनने के काम हैं ये जल्द से जल्द पूरे हो सकें। मेरी विधान सभा की जनता आपकी आभारी रहेगी, धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः शिव चरण गोयल जी।

श्री शिव चरण गोयलः अध्यक्ष जी, आपने मेरी विधान सभा और दिल्ली की समस्या पानी और सीवर को उठाने का मौका दिया इसके लिये धन्यवाद। अध्यक्ष जी, जब मैं 2015 में विधायक बना मोती

नगर विधान सभा का तो पूरी मोती नगर विधान सभा में सीवर और पानी की भयंकर समस्या थी। लोगों को पानी नहीं मिलता था, सीवर साफ नहीं होते थे, गंदे पानी की समस्या लगातार थी और उस समस्या को भारतीय जनता पार्टी आज तक कर नहीं पाई थी, इसका समाधान माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी ने जो जलबोर्ड के लिये किया, मात्र एक डेढ साल के अंदर वहां पर पानी की सप्लाई बेहतर हो गयी, सीवर सिस्टम बेहतर हो गया, सारे काम बेहतर हो गये और एक साल पहले तक मोती नगर विधान सभा में कोई प्रॉब्लम नहीं थी। लेकिन अभी पिछले एक साल से ये प्रॉब्लम बढ़नी शुरू हुई और कई जगह तो ऐसी।

माननीय अध्यक्षः मैं अभी अनाउंस करता हूं।

श्री शिव चरण गोयलः ऐसी भयंकर परिस्थितियां पैदा हो गयी हैं हमारे यहां पर एक है रामा रोड इंडस्ट्रियल एरिया सद्गुरू सिंह राम सिंह मार्ग तो वहां पर इस समय सड़कों पर पानी भरा है और बार-बार झंडेवालां में मीटिंग करके जलबोर्ड के ऑफिसर से मीटिंग करने के बाद कोई उसका हल नहीं निकल पा रहा। इसी तरह से हमारे मान सरोवर गार्डन एफ ब्लॉक, ई ब्लॉक, वहां भी सीवर की लाइनें बैठी हुई हैं। अधिकारियों से बात करते हैं कि आप इसको सीवर को बदलें तो अधिकारी एक ही बात कहते हैं कि हमें ठेकेदारों ने काम करने से मना किया हुआ है कि ठेकेदार की पेमेंट पिछले एक साल से नहीं हो रही और वो कोई भी काम करने में मना कर रहे हैं। अब सीवर और पानी की समस्या आज पूरी विधान सभा में हर जगह दिन पर दिन बढ़

रही है। और ये तो इस तरह के काम हैं रूटीन वर्क के काम हैं कि जिसको आज साफ नहीं किया गया तो कल बढ़ जायेगा। ये कहना ये चाह रहे हैं भारतीय जनता पार्टी की हम तो काम करेंगे नहीं लेकिन इनको करने भी नहीं देंगे। ये एक सोची समझी साजिश के तहत दिल्ली सरकार के काम रोके जा रहे हैं। जब पिछले बजट के अंदर 15 हजार करोड़ रूपये की सेविंग आई, हमारे पास पैसा पूरा है और ये पैसे को इस्तेमाल नहीं करने दे रहे और ये घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं और ये पूरे जनता को, अब पूरी तरह से ये समझ लेना चाहिये ये जो अभी कह रहे थे हाईकोर्ट का ऑर्डर नहीं मानते, हमारे विजेंद्र जी कह रहे थे, आप कौन सा हाईकोर्ट का ऑर्डर मान रहे हैं। जब जनवरी के अंदर हाईकोर्ट ने कह दिया कि आप जलबोर्ड के पैसे दो, आप पैसे क्यों नहीं दे रहे? तो ये जो घड़ियाली आंसू हैं न ये आप जिस तरह से।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: चलिये चलिये शिव चरण जी।

श्री शिव चरण गोयल: 15 हजार करोड़ रूपये पड़े हैं अभी भी सेविंग के अंदर।

माननीय अध्यक्ष: शिव चरण जी करिये आप अपनी बात पूरी करिये।

श्री शिव चरण गोयल: तो मैं ये बात कहना चाहता हूं कि इनके खिलाफ जो भी सख्त से सख्त एक्शन लेना चाहिये, कि कम से

कम जनता को राहत मिले। आपने मुझे बोलने का मौका दिया बहुत बहुत शुक्रिया, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः देखिये माननीय विपक्ष के सदस्य की और से मेरे पास चार नाम आये हैं। संजीव जी, मैं प्रार्थना कर रहा हूं आप नाम सातों के भेजें, आठों के भेजें, मुझे कोई आपत्ति नहीं, लेकिन मैं जो संख्या की रेश्यो है इस सदन में उसी रेश्यो में मैं अलाउ करूंगा आगे से मैंने निश्चय किया है। बस, नहीं, अलाउ करूंगा उसे उसी रेश्यो से अलाउ करूंगा।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः किस, कौन सी में?

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः वो मेरे से बात करना, नहीं रखे। हां, लेकिन मैं सदन में बोलने के लिये मैं आज विषय पर इस पर आपको जहां जाना है जाईये। बैठिये अभी। बैठिये। नरेश यादव जी। श्रीमान नरेश यादव जी। ये मैं दो ही अलाउ कर रहा हूं, दो का नाम करिये इसको। एक बनता है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः कौन है एलओपी? मेरे पास कोई, हां एक मेंबर एक एलओपी। बस that's all, not more than that.

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं उसी हिसाब से कर रहा हूं सता पक्ष के सात लोगों को अलाउ कर रहा हूं, रेश्यो के हिसाब से एक एमएलए बैठता है, चलिये। भई आपस में बातचीत नहीं प्लीज। चलिये।

श्री नरेश यादवः अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे जो दिल्ली की एक गंभीर समस्या, पानी की समस्या पर बोलने का मौका दिया उसके लिये मैं आपका आभारी हूं। अध्यक्ष जी, मैं 2015 में जब विधायक बनकर आया था तो महरौली विधान सभा में पानी की सबसे बड़ी समस्या थी। जिस भी क्षेत्र में मैं जाता था वहां सिर्फ पानी की बात होती थी। दूसरी डव्लपमेंट के लिये अगर हम बात करते थे लोग सुनना पसंद नहीं करते थे। सभी लोग कहते थे कि हमें पानी चाहिये और महरौली की जो समस्या थी वो बहुत ही गंभीर थी। अध्यक्ष जी वहां पर लगभग 10 से 12 दिनों में पानी आता था। उस समय जब महरौली में मैंने सारा पूरा का पूरा उस पूरे सिस्टम को देखा तो अध्यक्ष जी वहां पर 2012 में एक प्रोजेक्ट स्टार्ट हो रखा था लेकिन वो प्रोजेक्ट बंद हो गया था। मैं माननीय सीएम साहब से मिला, मैंने उनसे रिक्वेस्ट की कि ये प्रोजेक्ट या तो बंद किया जाये या इसको स्टार्ट करके वहां के लोगों को पानी दिया जाये। अध्यक्ष जी, 2015 से मैं लगातार महरौली के वॉटर प्रोजेक्ट के लिये इस सदन में भी चार पांच बार उठा चुका हूं लेकिन आज तक वहां पर पानी की समस्या रिजॉल्व नहीं हुई है। वो प्रोजेक्ट पूरा नहीं हुआ है। उस प्रोजेक्ट की जो कंपनी थी एमबीवी उसके भी 10 साल पूरे होने के बाद उसको हटा दिया गया लेकिन आज तक दिल्ली जल बोर्ड का प्रोजेक्ट डिपार्टमेंट उस काम को टेकअप नहीं कर

रहा है। उस जो कंपनी को कांट्रेक्ट मिला था उसको भी लगभग एक डेढ साल हो चुका है। लेकिन अभी तक दिल्ली जल बोर्ड के प्रोजेक्ट डिपार्टमेंट ने एक दिन भी वहां काम स्टार्ट नहीं किया है। इसके अलावा अध्यक्ष जी, इसी की वजह से इस प्रोजेक्ट की वजह से वहां पर आज भी वहां पर लगभग पांच छह दिनों में पानी आता है। हम लोगों ने पिछले टेन्योर में वहां पर कुछ ट्यूबवैल लगाये बीस-पच्चीस, लेकिन उससे भी आपूर्ति पूरी नहीं होती। आप सोचिये लगभग सौ से ज्यादा वाल्व्स को ऑपरेट करना पड़ता है। एक गली में डाल रहे हैं वॉल्व बंद करना पड़ता है फिर आगे जाता है। ऐसे सौ जगह वॉल्व ऑपरेशन होता है महरौली के अंदर तब जाकर लोगों को पानी मिलता है। अगर एक किसी लाइन का पानी रूक गया तो लगभग-लगभग उसको चार पांच दिनों के बाद नंबर आता है। आज ये स्थिति है महरौली की, महरौली टाउनशिप की जहां पर वर्ल्ड क्लास कुतुब मीनार है और इंटरनेशनल टूरिस्ट आते हैं उस महरौली की व्यथा को मैं यहां बयान करते हुए आ रहा हूं इस सदन के अंदर और ये सारा का सारा जलबोर्ड की वजह से है। पिछली बार तो मैंने जलबोर्ड की इसी समस्या को पिटिशन कमेटी में भी भेजने का आपसे विनती की थी। अध्यक्ष जी, एक सीवर का प्रोजेक्ट भी महरौली का चल रहा था 2012 से लेकिन इस सीवर के प्रोजेक्ट को भी पूरा नहीं किया गया। ये अधिकारियों ने पता नहीं क्या सोचा हुआ है कि महरौली के इस दोनों प्रोजेक्ट से इनका क्या जुड़ाव है क्योंकि इसमें इंक्वायरी तो होनी ही चाहिये। आज तक सीवर भी वहां पर ठीक नहीं किये गये हैं। सीवर की भी बहुत बुरी हालत

है। रोड के उपर पानी बहता है। गलियों में नालियों में मिक्स होके पानी चल रहा है। लोगों को गंदा पानी आ रहा है, बहुत शिकायतें आ रही है अध्यक्ष जी। लेकिन महरौली की आज तक भी कोई सुनवाई नहीं की गई। मैंने माननीय मंत्री जी से भी रिक्वैस्ट की थी पिछली बार की वहां पर सुनिए शायद दिल्ली में भी ऐसी जगह नहीं होगी जहां चार-पांच दिनों में पानी आता होगा। और ये मैं हकीकत बयान कर रहा हूं, मैं आप कहेंगे तो मंत्री जी का विजिट भी मैं वहां करवा सकता हूं। अध्यक्ष जी महरौली के अलावा, महरौली से लगता हुआ गांव है किशनगढ़, किशनगढ़ गांव की भी हालात ऐसे ही है। हालांकि वो इस प्रोजैक्ट में इन्वोल्व नहीं है, लेकिन वहां पर जो पाइप लाइन्स डली हुई है, बहुत पुरानी डली हुई है, सीवर लाइनें बहुत पुरानी डली हुई है। हम लगातार वहां की समस्या भी उठाते हुए आए हैं लेकिन उसके ऊपर भी बिल्कुल कोई गौर नहीं है, जबकि पिछले टन्योर में हमने काफी ट्यूबैल्स लगाकर उस स्थिति को थोड़ा कंट्रोल करने की कोशिश की लेकिन लोंगटर्म और परमानेंट सोल्यूशन अभी तक नहीं निकाला गया। अध्यक्ष जी इसके अलावा मसूदपुर गांव में भी पानी की और सीवर की लाइनें इतनी पुरानी हो चुकी है, सीमेंट की लाइनें डली हुई है वहां पर और लेकिन आज तक अभी तक कोई हल नहीं निकला। मैं वहां जाता हूं लोग मुझे पकड़ते हैं, क्योंकि गांव में बेसमेंट्स भी है, बेसमेंट ले जाकर दिखाते हैं, पानी वहां पर निकल रहा होता है, बेसमेंट के अंदर। तो वो लोग भी कब तक चुप रहेंगे, कब तक ये इस तरह की समस्या चलती रहेगी। मैंने इस सदन में भी इस बार भी मसूदपुर और किशनगढ़ की समस्या को उठाया था, लेकिन उसके बाद भी

किसी भी तरह का कोई हल वहां पर निकलता हुआ नजर नहीं आ रहा। कुसुमपुर पहाड़ी एक बहुत बड़ा कलस्टर है अध्यक्ष जी। लगभग 50 हजार से ज्यादा लोग वहां पर रहते हैं। वहां पर केवल ट्यूवैल से, जो कि पांच-सात ट्यूवैल है, पहाड़ी क्षेत्र है पानी मिलता है, अदरवाइज सारा का सारा टैंकर से सप्लाई है। टैंकर्स भी वहां पर शफिशैंट क्वांटिटी में नहीं जा पा रहे क्योंकि अभी हाल ही में टैंकर्स भी हटा दिए थे। टैंकर्स लगाए गए लेकिन उसके बाद में अचानक कोई ऑर्डर आया कि एक विधानसभा के टैंकर्स दूसरी विधानसभा में भेज दिए जाएंगे और वहां पर हमारे क्षेत्र से महरौली विधानसभा से चार-पांच टैंकर्स भी हटा दिए गए जिससे वहां की सप्लाई बाधित हुई और वहां पर भी लोगों की डिमांड है कि वहां यूजीआर बनाया जाए और वहां पर पाइप लाइन के द्वारा पानी दिया जाए। अध्यक्ष जी, रजोकरी भी एक ऐसा गांव है जहां पर आज तक कोई भी फिल्टर लाइन नहीं है, रजोकरी चारों तरफ पहाड़ी से घिरा हुआ है, अरावली की पहाड़ियाँ हैं वहां पर और उसमें कहीं से भी, किसी भी एरिया से वहां पर फिल्टर लाइन जल बोर्ड की नहीं आती। एक प्रोजैक्ट स्टार्ट किया गया 2019 में उसका उद्घाटन हुआ, बनकर भी तैयार है लेकिन आज तक वहां पर पानी नहीं दिया गया, ट्यूवैल्स के लिए भी अध्यक्ष जी इन लोगों ने, दिल्ली जल बोर्ड ने उसको तरसा दिया लोगों को कि टयूवैल्स अगर सैंक्शन भी है तो उसको भी वो लोग नहीं लगा रहे हैं, पिछले काफी दिनों से वहां पर ट्यूवैल्स भी नहीं लगाए जा रहे। तो लोगों को वहां पर भी विकट समस्या दिल्ली जल बोर्ड की है।

माननीय अध्यक्षः नरेश जी कन्क्लूड करिए, कन्कलूड करिए प्लीज।

श्री नरेश यादवः अध्यक्ष जी, लोकल जो ऑफिसल्स हैं, जैसे एक्सईएन है, एई या जेई है वो थोड़ा-बहुत काम समझते हैं, अगर वो कभी काम करने का प्रयास करते हैं, उनका ट्रांस्फर कर दिया जाता है, अचानक। सुबह पता चला एई, जेई तक लेवल के लोग हटा दिये जाते हैं। तो वो वहां पर काम कैसे चलेंगे, कैसे वहां पर हमारा काम होगा। अध्यक्ष जी, गंदा पानी आ रहा है, लोग बीमार हो रहे हैं, बहुत सारे हैल्थ इसूज हो रहे हैं। अध्यक्ष जी इसके अलावा एक वहां पर जैडआरओ वसंतकुंज के बीचों-बीच था जैडआरओ ऑफिस लेकिन उसको हटा कर वहां पर साकेत के कोने पर कर दिया, पूरी constituency एक तरफ है लेकिन वो बीचों-बीच का ऑफिस भी है।

माननीय अध्यक्षः नरेश जी इस विषय को आप पहले रख चुके हो अभी आप। इसी सदन में रख चुके हो।

श्री नरेश यादवः लेकिन उसको भी हटा दिया गया। अध्यक्ष जी इसके अलावा पूरे क्षेत्र के अंदर बढ़े हुए बिल आ रहे है, जिसकी डिमांड लगातार हम लोग माननीय मंत्री जी, इस सदन में भी, हर जगह उठाते हुए आ रहे है। वो समस्या भी एक विकट बनी हुई है। अध्यक्ष जी जल बोर्ड की मेरी विधानसभा में बहुत समस्याएं हैं, पानी की, सीवर की, सफाई की, नई लाइनों की। आपने आज मुझे अध्यक्ष जी इस विषय पर, जो कि बहुत गम्भीर विषय है मेरे क्षेत्र का बोलने का मौका दिया मैं आपका दिल से आभार व्यक्त करता हूं, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः अजय महावर जी।

श्री अजय महावरः धन्यवाद अध्यक्ष जी, सबसे पहले तो मैं भाजपा विधायक दल के सभी साथियों को बधाई देता हूं जो आज दौबारा सदन में कार्यवाही में हिस्सा ले रहे हैं, जिनके बीस दिन इस सदन में खराब हुए है। जल बोर्ड के इस चर्चा पर हिस्सा लेते हुए मुझे आज अटल जी याद आ गए। अटल जी कहा करते थे कि मीठा-मीठा गप-गप, कड़वा-कड़वा थू-थू। यानि credit और discredit का डिवीजन भी ये दिल्ली सरकार कर रही है, मैंने दुनिया में ऐसी कोई सरकार नहीं देखी। क्रेडिट मेरा और डिसक्रेडिट दूसरे का।

...व्यवधान...

श्री अजय महावरः देखिए मुझे बोलने दें, मैंने किसी को डिस्टर्ब नहीं किया।

माननीय अध्यक्षः भई प्लीज बोल लेने दीजिए उनको।

श्री अजय महावरः ये ऐसी सरकार है, एक डेंगू का मच्छर मारकर भी करोड़ों का विज्ञापन देकर अपनी पीठ थपथपाती है। ये ऐसी सरकार है, 40 हजार की दवाई छिड़कर खेतों में करोड़ों का विज्ञापन देती है, ये ऐसी सरकार है जो करोड़ों में एक जापानी मशीन लाकर के और अपनी पीठ थपथपाती है।

माननीय अध्यक्षः भई महावर जी ये आपको एक सैकेंड।

श्री अजय महावरः लेकिन-लेकिन-लेकिन जो जल बोर्ड के मुद्दे हैं।

माननीय अध्यक्षः महावर जी मेरी बात सुन लीजिए, महावर जी जल बोर्ड पर अगर चर्चा करनी है तो करिए।

श्री अजय महावरः चर्चा का हिस्सा नहीं है क्या ये?

माननीय अध्यक्षः नहीं जल बोर्ड पर नहीं।

श्री अजय महावरः जल बोर्ड पर ही है।

माननीय अध्यक्षः आप और कहीं लेकर जा रहे हैं।

श्री अजय महावरः जल बोर्ड पर ही इस समय बोल रहा हूं मैं।

माननीय अध्यक्षः करिये।

श्री अजय महावरः अध्यक्ष जी मैं जल बोर्ड पर ही हूं।

माननीय अध्यक्षः अब इसीलिए परेशानी खड़ी होती है।

श्री अजय महावरः मैं जल बोर्ड पर ही बोल रहा हूं। और जब जल बोर्ड के सीवर की समस्या आती है, जब सीवर ओवरफ्लो होकर उफनते हैं, सड़कों पर गंदगी फैलती है, तो इसका डिसक्रेडिट अधिकारियों पर फोड़ने का कारण ढूंढ़ते हैं। जब क्रेडिट आप लेते हैं तो डिसक्रेडिट आपका होना चाहिए। आप दोनों विषयों को अलग नहीं कर सकते। आप अधिकारियों पर सर पर माथा नहीं फोड़ सकते। आदरणीय मंत्री जी ने भी इसको अधिकारियों के माथा फोड़ने का कोशिश की है, लेकिन

अगर सरकार अधिकारियों, क्या पहले सरकारें नहीं चली हैं, पहले भी सरकारें चली हैं दिल्ली में। तो सदन में अगर आपकी क्षमता है और आप अधिकारियों को कमांड नहीं कर पा रहे, आप अगर सरकार ठीक से नहीं चला पा रहे तो छोड़ दीजिए सरकार, इस्तीफा दीजिए। लेकिन जो दिल्ली की जनता के हित की लड़ाई है, सारे पेरिफेल जाम पड़े हैं, सभी विधानसभाओं के, ये तो मेरी पीड़ा अकेले की नहीं है, ये पूरे सदन की पीड़ा है। निश्चित रूप से सभी जगह ओवरफ्लो है, ये नाकामी हो रही है दिल्ली जल बोर्ड की। लेकिन 72 हजार करोड़ रुपए का हिसाब कौन देगा। श्वेतपत्र क्यों नहीं लाया जाता इस सदन में जब बार-बार हम कह रहे हैं, श्वेतपत्र की मांग करते हैं, आप लाइये और जिसको भी इसकी, जो भी सजेवार होगा, गुनेहगार होगा उसको सजा मिलनी चाहिए। हम किसी को बचाने के लिए यहां नहीं खड़े हैं, हम जनहित की लड़ाई के लिए यहां खड़े हैं और इसमें तो आप ये आप देखिये नई भर्ती कोई हो नहीं रही, जो आप खुद भी सदन में कह रहे हैं, नई भर्ती कोई नहीं हो रही, स्टाफ बहुत कम है, मेरी घोंड़ा विधानसभा में 5 गाड़ियाँ रह गई हैं बस, 15 स्टाफ रह गया है, इतनी बड़ी विधानसभा में, साढ़े तीन से चार लाख वहां पर लोग रहते हैं। तो ये सदन में मुद्दा तो दर्दभरा है और इस जनता की हित की लड़ाई में हम जनता के साथ खड़े हैं। लेकिन इसको आईडेंटीफाई करके सिर्फ दूसरे के मथ्थे मढ़ने का काम नहीं करना चाहिए। बिलों में गड़बड़ी का मामला आया पानी की, अब आप बताइये इस बिलों में गड़बड़ी का जिम्मेदार कौन है। भई सरकार आपकी और बिलों में गड़बड़ी आ गई

फिर कहते हो उसको माफ कर देंगे। अरे गड़बड़ी हुई क्यों, इसकी जवाबदेही कौन लेगा, वो भी ये सदन तय करे की इसमें जवाबदेही कौन लेगा। टैंकर माफिया अभी नरेश यादव जी कह रहे थे, टैंकर माफियाओं के हौंसले बुलंद हैं। क्यों हौंसले बुलंद है क्योंकि 9 साल में हम लोगों को हर घर नल जल दे नहीं पाए। तो जबकि केंद्र सरकार ने अमृत योजना के तहत बहुत सारे साधन, बहुत सारा पैसा दिया है और सरकार इसको एडमिट करती है कि हाँ केंद्र सरकार ने अमृत योजना के तहत बहुत सारा पैसा दिया है, लेकिन फिर भी यह सरकार नाकामयाब है और अपनी जिम्मेदारी को जनहित के मुद्दों पर काम नहीं करके और सिर्फ टकराव के रास्ते पर ये सरकार चल रही है, जो शायद दिल्ली की जनता के हित में नहीं है, दिल्ली इस सरकार पर निश्चित रूप से विचार कर रही है और अगले चुनाव में इसका जवाब देगी, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः मैं अजय महावर जी को बधाई देता हूं कि उन्होंने अटल जी को इस सदन में याद किया है और मैं उसी वक्त मुझे एक जो उनका शब्द पार्लियामेंट में था, बहुत प्रेरणादायक था मैं उसको दोहराना समझ रहा हूं। जब अटल जी की सरकार एक वोट से गिरी, उन्होंने बोला था मंड़ी सजी हुई थी, खरीददार कोई नहीं था। आज खरीददार हैं, ब्रीफकेस लेकर के, अटल जी की उस बात से भी प्रेरणा ले लें। श्री बी. एस. जून जी। रिकोर्डिड हैं ये शब्द। गूंजता है कानों में।

श्री बी एस जूनः धन्यवाद सर। सर वैसे तो पूरे जल बोर्ड को ही डिफंक्ट कर दिया गया है, पंगू बना दिया गया है, लेकिन सीवरेज

सिस्टम के बुरे हालात हैं। पूरा लोगों के घरों में पानी जा रहा है, गलियों में पानी खड़ा है, नींव में पानी जा रहा है, इवन बेसमेंट में पानी खड़ा हुआ है सर। सर ये लोग किसे पनिश कर रहे हैं, ठेकेदारों की पेमेंट ना करके। या तो ये आम आदमी पार्टी को पनिश कर रहे हैं या हम एमएलएज को पनिश कर रहे हैं। जबकि ये इनफैक्ट आम पब्लिक को पनिश कर रहे हैं, ठेकेदार क्यों नहीं काम कर रहे, सात-आठ महीने से पेमेंट नहीं हुई। अगर सात-आठ महीने से पेमेंट नहीं हुई, मसला हाईकोर्ट तक पहुंच गया, तो क्या ऐसा adamant attitude है कि आप उनकी पेमेंट नहीं कर रहे जानबूझ कर, कब ये इशू सोल्व होगा। दूसरा सर, पानी जब सीवर-नालियों में बहेगा, घरों में जाएगा, वो ड्रिंकिंग वॉटर में भी मिक्स होगा, उसका रिजल्ट क्या हुआ सर contaminated पानी आना शुरू हो गया। जब contaminated पानी आना शुरू हुआ लोगों को डायरिया हो गया, जोंडिस हो गया, दूसरी water borne diseases लोग फेस कर रहे हैं। तो उसके लिए कौन जिम्मेवार है। अगर कल को कोई डैथ हो जाती है सर इन बीमारियों की वजह से क्या एलजी साहब उसका जवाब देंगे या चीफ सेक्रेटरी साहब जवाब देंगे या फाइनेंस सेक्रेटरी साहब जवाब देंगे? क्यों नहीं ये मतलब लोगों से दुश्मनी क्यों निभाई जा रही है। कुछ ऐसे एरियाज हैं सिर्फ झुग्गियाँ जो फोरेस्ट पर बसी हुई हैं, वहां ना वॉटर लाइन है, ना दूसरे कोई ट्यूवल हो सकता है। तो सिर्फ और सिर्फ टैंकरों से वहां पानी पहुंचाया जाता है, वो टैंकर कम कर दिए गए सर। तो एक ये क्यों जानबूझ कर जनता को पनिश किया जा रहा है। ये लोग सोचते हैं आम आदमी

पार्टी सरकार को बदनाम कर दो या एमएलएज को बदनाम कर दो, ऐसा नहीं है पब्लिक भी समझती है कि जानबूझकर पैसा रोका जा रहा है ताकि सरकार को बदनाम किया जा सके और इस सिस्टम को जो है फेल किया जाए। लाइनें सैटल हो गई हैं सर कैसे काम होगा अगर पैसा नहीं है, कॉन्ट्रैक्टर नहीं आ रहे तो। तो मेरा कहने का मतलब ये है कि ये adamant attitude जैसे अभी अजय जी कह रहे थे कि भई आप अधिकारियों को ब्लेम मत करो। क्या जरूरत है अब हम भी चलेंगे, आप भी चलिए चलो पेमेंट कराते हैं। सभी चलते हैं साथ चलकर, पेमेंट कराइये उनकी, काम रिज्यूम होगा, काम दोबारा शुरू होगा और ये दिक्कत खत्म होगी। उसके बाद सर यूजीआर बनने से जैसे हमारे नरेश भाई ने कहा, यूजीआर अधूरे पड़े हैं 2018 में जो शुरू हुए थे पैसे के बिना वो अधूरे पड़े हैं, कॉँट्रैक्टर काम नहीं कर रहे। इवन सर जो बोर सैंक्शन पड़े वो नहीं हो रहे, कॉन्ट्रैक्टर आकर दूसरे कॉन्ट्रैक्टर्स को रोकते हैं कि हमारी यूनिटी को खराब कर रहे हैं आप हमें पेमेंट होने दें, उसके बाद जो है हम इस काम को शुरू करेंगे। लोग कहां जाएं सर, इनफैक्ट सफरर कौन है, आम पब्लिक। इनको भी कोई फायदा होने नहीं जा रहा सर इन चीजों से जैसा ये कर रहे हैं कि अधिकारियों को ब्लेम कर रहे हैं, अधिकारी तभी काम करेंगे जब लेबर होगी जब कॉन्ट्रैक्टर होंगे और कॉन्ट्रैक्टर जब होंगे जब उनको पेमेंट होंगी। एक साल से पेमेंट नहीं हुई तो वो लोग का काम क्यों करेंगे। अब ये टैक्नीकल इशूज में लोगों को उलझाए जा रहे हैं। उनको छोड़ें पब्लिक की सोचें कि पब्लिक के काम कैसे होंगे। लोगों को क्यों मारने पर तुले

हुए हैं। अगर कल को कोई डैथ हो गई और दिल्ली जल बोर्ड पर या एलजी साहब के खिलाफ किसी ने tort का केस कर दिया तब इनको याद आएगा। मैं तो कहता हूं लोगों को जाना चाहिए, openly revolt करना चाहिए कि पैसा क्यों रोक रखा है जल बोर्ड का।

माननीय अध्यक्षः चलिए जून साहब बैठिए प्लीज हो गया।

श्री बी एस जूनः थैंक्यू वैरी मच सर।

माननीय अध्यक्षः संजीव झा जी। बहुत संक्षेप में संजीव जी।

श्री संजीव झाः जैसा कि बाकी साथियों ने बताया की जल बोर्ड की जो समस्याएं हैं, मेरी अपनी constituency में भी और बहुत सारी समस्याएं हैं। एक तो पूरी constituency में गंदे पानी की समस्या है, पाइप की लीकेजिज हैं, बहुत सारी जगह पर पाइप लाइन नहीं है और इसको लगातार हम लोग जल बोर्ड के सभी अधिकारियों से मिलकर कहा हमने, सीईओ से मिलकर के कहा, अभी कोई समाधान नहीं है। मैं आपको दिखाऊं की लगभग 27-28 टैंडर हैं, जो टैंडर अवार्ड तो हो गया लेकिन काम शुरू नहीं हो पाया है और काम शुरू इसलिए नहीं हो पाया, चूंकि कई जगह कह रहे हैं ठेकेदार का पेमेंट नहीं हो पाया तो ठेकेदार काम करने के लिए नहीं तैयार है। कई जगह अब ठेकेदार काम लेने के लिए तैयार नहीं है, नो बिड हुए जा रहा है। तो अफरातफरी का माहौल पूरे हमारे constituency में है। मुझे ये लगता है कि ऐसा लगता है कि ये जानबूझकर सीईओ, चीफ सेक्रेटरी और उन सबके जो गार्जियन हैं वो हमारे महामहिम एलजी साहब हैं। एक

political vendetta के कारण दिल्ली की जनता को परेशान कर रहे हैं, मुझे कई बार बड़ा शर्म भी महसूस होता है कि इस सदन में चाहे हम पक्ष के हों या विपक्ष के हों, दिल्ली की जनता ने हमें सदन में भेजा है और जब सदन में भेजा है तो आपकी जिम्मेदारी है कि सदन की ताकत जितनी रहेगी उतना ज्यादा जनता का काम होगा, लेकिन हमारे विपक्ष के साथी जिस तरह से ऑफिसर की तरुदारी करते हैं, एलजी की तरुदारी करते हैं, दिल्ली की जनता और देश की जनता आपको मफ़ नहीं करेगी और अगली बार जब वोट मांगने जाएंगे तो पूछेगी कि जब हम पीड़ित थे तो तुम हमारे खिलाफ खड़े थे, मैं तुमको क्यों वोट करूं। तो मुझे ये लगता है कि आज छोटी-छोटी पोलिटिकल फायदे के लिए अरविंद केजरीवाल जी को परेशान करने के लिए तुम दिल्ली की जनता से बदला ना लो। तो आज जितनी भी आपने समस्याएं हमारे constituency में हैं या बाकी साथी कह रहे हैं, ये समस्या केवल इसलिए create हो रही है चूंकि एलजी साहब नहीं होने देना चाह रहे हैं, हमने ये देखा है। पहली बार हमने देखा है अध्यक्ष महोदय, जनतंत्र में प्रभारी मंत्री होता था, आज हमारे यहां प्रभारी आईएएस लगाया गया है, कोई बात नहीं आप लगाओ आईएएस। लेकिन वो आईएएस हमारे constituency बैठे और हमारे क्षेत्र की जनता की समस्या को सुनें, ऐसा नहीं हो सकता पोकेट में हाथ लो, अधिकारी के साथ घूम जाओ, ऐसा नहीं हो सकता। कल ही मैं मीटिंग करने के लिए बैठा हमारे यहां Flood and Irrigation की बड़ी समस्याएं हैं। पता चला कि वो हमारा प्रभारी जो आईएएस है वो आईएएस अधिकारियों को लेकर घूम रहा है

और अंदर आ ही नहीं रहा। मैं उसी आईएएस को हमने अपनी 40 समस्याओं को लिखकर दिया है। अगर एक सप्ताह के अंदर उस समस्याओं पर काम नहीं होगा तो फिर हम ये मानेंगे कि हमारा जो इस हाउस ने जो ताकत दिया, जो हमारा प्रिविलेज है उस प्रिविलेज का वाइलेशन अब उसी केस में अध्यक्ष जी आपसे अनुमति लेकर मैं उसको बुलाना चाहूंगा ताकि ऐसा नहीं होगा कि जनतंत्र में जनता ने जिस अपने प्रतिनिधि को चुना उसको बाईपास करके, तुम ऑफिस में बैठे हो ऐसा कैसे होगा, जनता जाएगी कहां। तुम मिलोगे नहीं, एलजी साहब मिलेंगे नहीं, जनता का काम होगा नहीं। तो मुझे लगता है ये political vendetta के तहत जिस तरह से दिल्ली की जनता को तंग करने की कोशिश की जा रही है, दो महीने बाद चुनाव है दिल्ली की जनता जवाब देगी, बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष: श्री दिलीप कुमार पाण्डेय जी।

श्री दिलीप पाण्डेय (मुख्य सचेतक, सत्तापक्ष): अध्यक्ष महोदय ये बड़ा गम्भीर विषय सदन के साथियों ने रखा है जिसकी वजह से दिल्ली की अलग-अलग विधानसभाओं के अंदर वहां की जनता परेशान है, परेशान होकर हमारे पास आ रही है और इस संदर्भ में इस ज्वलंत विषय पर मैं एक संकल्प-पत्र रखना चाहूंगा। ''राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली की विधान सभा दिनांक 9 मार्च, 2024 को आयोजित बैठक में संकल्प करती है कि दिल्ली के दो करोड़ लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले इसे सदन के संज्ञान में आया है कि बहुत भारी संख्या में दिल्लीवासी जल आपूर्ति और सीवरेज के रख-रखाव से संबंधित गम्भीर

समस्याओं का सामना कर रहे हैं। शहर के कई हिस्सों में सीवर के ओवरफ्लो होने, दूषित जल की आपूर्ति और पानी की पाइप लाइनों में लीकेज की गम्भीर समस्याएं सामने आ रही हैं। विभिन्न कालोनियों के निवासी इन समस्याओं के बारे में इस सदन के सदस्यों को जानकारी दे रहे हैं, जबकि जल आपूर्ति और सीवरेज नेटवर्क का रखरखाव और अन्य संबंधित कार्यों के निष्पादन का उत्तरदायित्व दिल्ली जल बोर्ड का है। इस सदन के सदस्यों ने सीवर ओवरफलो, दूषित जल आपूर्ति और पानी की पाइपलाइनों के रिसाव से संबंधित शिकायतों को दिल्ली जल बोर्ड के अधिकारियों के साथ-साथ उक्त बोर्ड के शिकायत पोर्टल 19196 पर भी हर बार साझा किया है। लेकिन लगातार शिकायतें मिलने के बावजूद दिल्ली जल बोर्ड ने इन मुद्दों का कोई समाधान नहीं किया। यद्यपि कुछ समस्याएं अस्थाई रूप से हल भी हो जाती हैं, लेकिन कुछ दिनों बाद पुनः उत्पन्न हो जाती हैं जिसके परिणामस्वरूप दिल्ली में अनेक लोग अमानवीय परिस्थितियों से गुजर रहे हैं, रह रहे हैं। दिल्ली के लोगों की असहनीय पीड़ा को देखते हुए यह सदन प्रस्तावित करता है कि इन शिकायतों को सबसे पहले तो युद्धस्तर पर निपटाया जाए ताकि दिल्ली के लोगों को सीवर ओवरफ्लो और दूषित जल की आपूर्ति जैसी कोई समस्या का सामना ना करना पड़े। दूसरा दिल्ली के विभिन्न क्षेत्र से मिल रही पानी और सीवरेज संबंधी शिकायतों के समाधान के लिए दिल्ली के जो माननीय मुख्य सचिव महोदय हैं, वह राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार के वो पूर्णतः उत्तरदायी होंगे। तीसरा इन शिकायतों के समाधान के लिए मुख्य सचिव, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार

को एक सप्ताह का समय दिया जाता है और इस अवधि के दौरान मुख्य सचिव इन मुद्दों पर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार के जल मंत्री को दैनिक रिपोर्ट देंगे। चौथा और आखिरी, कि इस मुद्दे पर आगे विस्तृत रूप से विचार करने के लिए शुक्रवार यानि दिनांक 15 मार्च, 2024 की सुबह 11 बजे विधानसभा का सत्र बुलाया जाए जिसमें मुख्य सचिव महोदय व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर उक्त सभी शिकायतों के समाधान के संदर्भ में अपनी प्रगति की रिपोर्ट प्रस्तुत कर सकें'', धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः मोहन सिंह बिष्ट जी। एलओपी का मेरी ओर से आपकी ओर से अभी तक कोई लैटर मेरे पास नहीं आया।

श्री मोहन सिंह बिष्टः आदरणीय अध्यक्ष जी, आपने जिस प्रकार से इस गम्भीर मुद्दे पर, सीवर हो, पीने का पानी हो, इस पर चर्चा का रखा है। निश्चित रूप से मैं मानता हूं कि दिल्ली की अधिकतर कॉलोनी हों, गांव हों, ये बहुत बड़ी गम्भीर समस्या बनी हुई है। हम लोग जिन-जिन विधानसभाओं से संबंध रखते हैं और उनकी स्थिति बद् से बद्तर हो चुकी है। मेरी विधानसभा में लगभग 11 गांव हैं 28 अनॉथराइज़् कॉलोनिज़् हैं, यदि अध्यक्ष महोदय उनको देखें तो आज क्षेत्र की जनता नारकीय जीवन यापन करने के लिये मजबूर हो रही है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से एक बात जरूर कहना चाहूंगा जो पिछले वर्षों के अंदर जो सीवर की लाइनें डाली गईं थीं वास्तव में वो सीवर की लाइन प्रमाणिकता के आधार पर खरी नहीं उतरतीं क्योंकि यदि सीवर की लाइन डली हों तो उसका आउटफॉल का सिस्टम

बिल्कुल ठीक होना चाहिये लेकिन वो आउटफॉल सिस्टम ठीक नहीं है। यही नहीं अध्यक्ष महोदय जो सीवर लाइनें डाली गई हैं उसमें जो रॉ मैटिरियल यूज़ किया गया है उस रॉ मैटिरियल की क्वॉलिटी ठीक नहीं है और जहां-जहां चैम्बर बने हैं अध्यक्ष जी वो सारे चैम्बर टूट गये क्योंकि घटिया सामग्री का प्रयोग किया गया था आज उनकी वजह से पूरी विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत पानी ओवरफ्लो होने की स्थिति में आ चुका है। अध्यक्ष महोदय, मेरी विधानसभा में सोनिया विहार एक सोनिया विहार, सभापुर गुजरान, चौहान पट्टी, बदरपुर खादर, पुर शाहदरा ये एरिया आता है। अध्यक्ष महोदय, बड़े दु:ख के साथ कहना पड़ता है राजनीति जरूर करें मन के अंदर मतभेद हो सकते हैं लेकिन मनभेद कभी नहीं रखना चाहिये, मतभेद रखिये ना आप। आपने 2019 में उसी क्षेत्र के अंतर्गत सोनिया विहार में सीवर का उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्री जी ने किया उस काम को रोक दिया गया फिर 2020 में चुनाव होता है वो काम रूका रहा 2022 के अंदर फिर उसी क्षेत्र का उस सीवर लाइन का टेंडर हो गया टेंडर होने के बाद उसकी जब E &S मिलनी थी, उसकी फाइल की अपरूवल होनी थी अध्यक्ष जी, तो उसका बजट एलोकेट होने के बाद उस फाइल को रोक दिया गया, इसलिये रोका गया क्योंकि मैं बीजेपी का एमएमए हूं। अरे क्षेत्र की जनता ने बीजेपी और कांग्रेस को जो उनको अच्छा कैंडिडेट लगा उसको विजयी बनाया, ये आप, आप पार्टी को उन्होंने वोट दिया 88 हज़ार वोट आम पार्टी को मिला। अध्यक्ष महोदय, उसका खामियाजा आज क्षेत्र की जनता भुगत रही है। आज वही काम प्रधानमंत्री जी के 'अमृत योजना' के सैकेंड के

तहत उस योजना को एप्रूवल के लिये वो फाइल गई है। मेरा सीधा-सीधा कहना ये है मतभेद जरूर कर लो लेकिन मनभेद मत करो, मनों के अंदर इतनी कटुता मत करो ये आमने-सामने हमने तो बहुत लम्बे समय से देखा है लेकिन कभी ऐसा सिस्टम नहीं हुआ, अध्यक्ष महोदय, उस काम को रोक दिया, आज वो लोग नारकीय जीवन यापन करें। एक बात मुझे अध्यक्ष महोदय आपके माध्यम से और कहनी है कि जो कॉलोनियां हैं जो अनॉथराइज़ बस्तिज़ हैं जो अन्य क्षेत्र हैं उनका पानी सीधा-सीधा आज यमुना जी में गिरता है वहां पर एसटीपी प्लांट कौन लगायेगा, उन प्लांटों की व्यवस्था कौन करेगा ये किसकी ड्यूटी बनती है। मैं सिर्फ अध्यक्ष महोदय ये कह दूं कि अधिकारी वो काम नहीं कर रहे हैं इससे पल्ला झड़ नहीं सकता है इससे तो निश्चित रूप से लगता है हम अपने आप में फेल हैं, हम काम नहीं करा पा रहे हैं, अधिकारी हमारी बातों को नहीं सुन रहे आखिर इसके पीछे तर्क क्या है, मान लिया हमने ट्विटर पर लिख दिया कि साहब ये सरकार ये काम नहीं कर रही है या अधिकारी ये विभाग आपका है आप इस विभाग से काम करने में इसका मतलब आप पूरी तरह से फेल है ये सरकार। ये सरकार को नैतिकता के आधार पर उस मंत्री को तुरंत रिजाइन देना चाहिये यदि वो काम ही नहीं करा सकता लोगों के भले की बात नहीं उठा सकता उसको सत्ता में रहने का कोई अधिकार नहीं है। दूसरी बात अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से एक नम्र निवेदन करना चाहता हूं बिजली हो, पानी हो, सीवर हो ये हमारी लाइफ लाइन से जुड़ता हुआ एक लाइन है यदि ये नहीं होता है तो मेरे को लगता

है कि दिल्ली में रहना बहुत मुश्किल हो जायेगा। पीने के पानी की यहां तक हम बात करें सर, आज आप देख रहे होंगे आपका एरिया हो, मेरा एरिया हो, यमुना विहार का एरिया हो, रोहिणी का एरिया हो या शाहदरा का एरिया हो सर ये यदि गंगाजल आता है तो सीधा करावल नगर के अंदर इसका ट्रीटमेंट प्लांट बना हुआ है, सोनिया विहार में प्लांट बना है, सर भगीरथी में ट्रीटमेंट प्लांट बना है उसके बाद आपके क्षेत्र के अंदर भी एक ट्रीटमेंट प्लांट बना है, हमको पीने का पानी नहीं मिलता। सर बराबर में दो विधानसभा हैं सर एक करावल नगर है दूसरा मुस्तफाबाद हमें अनुपात।

माननीय अध्यक्षः कन्क्लूड करिये प्लीज़।

श्री मोहन सिंह बिष्टः सर, अनुपात की दृष्टि से हमको पानी नहीं मिल रहा है और जबकि पानी हमारे यहां है, ज़मीन हमारी यदि कल को कोई लाइन टूट जाती है डूबने के लिये करावल नगर, पीने का पानी अन्य विधानसभाओं में कितना बड़ा अत्याचार हो रहा है अध्यक्ष महोदय मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय, मैं एक आपसे निवेदन और करना चाहता हूं आपके माध्यम से आज आप देखेंगे जो पुरानी लाइनें हैं सर वो पुरानी लाइनें टूट गई हैं उसका पानी गंदा पानी सीधा घरों पर जा रहा है। मैंने अभी आज से लेकर चार-पांच दिन पहले तुकमीरपुर मेन रोड़ के ऊपर एक बड़ी मोटी पेरीफ़िरल लाइन टूट गई सर, उस लाइन के टूटने के बाद क्या हुआ जो नाले का पानी था उस लाइन पर मिक्सअप हो रहा था सर वहां जल बोर्ड के पास पैसा ना हो उस लाइन को रिपेयर करने की बात तो दूर

की बात, सर वो ट्यूब उस पर लपेट दी गई और फिर पानी वहां का चालू कर दिया गया है। मेरा सीधा-सीधा कहना है कि सरकार को ऐसी व्यवस्था है आप बजट के नाम से बड़ा जम्बूजैट बजट पेश कर रहे हो इतना हज़ार करोड़ का बजट हमने दे दिया।

माननीय अध्यक्षः अभी बजट पर चर्चा आयेगी उसमें।

श्री मोहन सिंह बिष्टः अब देखिये क्या हुआ सर।

माननीय अध्यक्षः अभी बजट पर चर्चा आयेगी उसमें ले लीजिये ना।

श्री मोहन सिंह बिष्टः सर, सर एक मैं आपकी बात कन्क्लूड हूं सर।

माननीय अध्यक्षः लेकिन इसको कन्क्लूड करिये।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैं आपकी बात का सम्मान, सर मुझे बोलने तो दो।

माननीय अध्यक्षः मोहन जी।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मेरे क्रम को क्यों तोड़ें, आपने मुझे बोलने का समय दिया मैं आभार प्रकट करता हूं। सर एक मिनट मैं बताना चाहता हूं आखिर क्यों नहीं आज जो सीवर की लाइन है वो जो गाड़ियां लगी थीं जो मशीनें लगी थीं सर वो सब बंद कर दी हैं। मेरी विधानसभा में जो पानी के टेंकर लगे थे सर वो पानी के टेंकर आज वहां नहीं पहुंच रहे, उनकी पेमेंटें नहीं हुई, ठेकेदार को पेमेंट नहीं मिल

रही ये इसी हालत इसी प्रकार से वो जल बोर्ड हो या दूसरा हो उसमें काम करने की दिक्कत आ रही है लेकिन मैं आपके माध्यम से एक नम्र निवेदन करना चाहता हूं ये वक्तव्य देने से कुछ नहीं होने वाला है आप काम करने की हिम्मत रखो, सत्ता के साथ विपक्ष भी है क्योंकि प्रॉब्लम हमारी भी हैं हम आपके साथ खड़े हैं लेकिन ईमानदारी से काम करो, आरोप-प्रतिरोप नहीं, ये ड्यूटी आपकी बनती है अधिकारी उसे कैसे आपके संबंध होना चाहिये आपका रिलेशनशिप कैसा उनके साथ अधिकारियों के साथ। सर हो क्या रहा है आप अच्छा काम कर रहे हैं एरिया में आपको लोग चाहते हैं आपने अधिकारियों को तुरंत ट्रांसफर कर दिया हमारे यहां तो ना जे.ई. है ना ए.ई. है एक खाली XEN है। तो मेरा एक निवदेन है आरोप-प्रतिरोप करने से पहले अपने गिरेबान को खोजो यदि हम सामने वाले पर उंगली उठाते हैं तो चार उंगलियां तीन उंगलियां हमारे पास भी आती हैं इसलिये ये आरोप-प्रतिरोप ना करें सीधा दिल्ली की समस्याओं के समाधान के लिये हमें लड़ने की क्षमता होनी चाहिये इसलिये आप सरकार में आये हैं और सरकार में आये हैं तो काम करना चाहिये और इस सदन के अंदर निश्चित रूप से क्योंकि आज की मजबूरी भी है आज ही ये प्रस्ताव रखा गया है इस पर ध्यानाकर्षण चर्चा, कि अधिकारी यहां नहीं हैं लेकिन हमारी पीड़ा वो आपके माध्यम से वहां तक पहुंच जाये उन विधानसभाओं के बारे में ताकि वहां का समाधान हो सके। आपने मुझे बोलने का समय दिया बहुत-बहुत धन्यवाद, नमस्कार।

माननीय अध्यक्षः माननीय मंत्री, हमारी वॉटर की मंत्री भी हैं जल बोर्ड की माननीय आतिशी जी चर्चा का उत्तर देंगी।

माननीय जल मंत्री (श्रीमती आतिशी): धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, अध्यक्ष महोदय जिस तरह आपने बताया कि आपको कई विधायकों के पत्र आये हैं कई शिकायतें आई हैं, मैं भी आपके माध्यम से इस सदन से साझा करना चाहूंगी कि मेरे पास भी रोज़ तकरीबन 50 से 100 शिकायतें आ रही हैं कभी फोन पर कभी व्हाट्सअप पर कभी ईमेल के माध्यम से और तीन तरह की शिकायतें पिछले कुछ महीनों से बहुत ज्यादा आ रही हैं सबसे पहली की सीवर ओवरफ्लो कर रहा है ये शिकायत आ रही है दूसरी समस्या जो सबसे ज्यादा आ रही है वो सीवर ओवरफ्लो करने की वजह से water contamination की आ रही है कि सीवर का पानी मिक्स हो जाता है पीने के पानी की पाइनलाइन में तो गंदा पानी आ रहा है और तीसरी प्रॉब्लम ये आ रही है की जगह-जगह जैसे अभी बिष्ट साहब ने भी बताया कि पानी की लाइनें टूट रही हैं, लिकेज हो रही है, सड़क पर बह रही हैं, सड़कें खराब हो रही हैं लेकिन वो एक तो रिपेयर नहीं हो रही है और रिपेयर भी हो रही हैं तो किसी long term तरीके से रिपेयर नहीं हो रही हैं और मैं ये दावे के साथ कह सकती हूं कि इस मामले में पक्ष और विपक्ष में कोई अंतर नहीं है वो भी विधायक हैं हम भी विधायक हैं हम सबके दफ्तरों में रोज़-रोज़ ऐसी समस्यायें आ रही हैं। आप विश्वास नहीं करेंगे अध्यक्ष महोदय कल मात्र 24 घंटे में मेरे ऑफिशियल ईमेल पर और मेरे पर्सनल ईमेल पर मिलाकर मुझे 80 समस्या आईं जो जल बोर्ड

के मामलों से जुड़ी हुई हैं मतलब आप सोचिये 24 घंटे के अंदर 80 ऐसी ग्रीवेंसिज मेरे पास आ गईं तो कितने व्यापक स्तर पर ये समस्या आज के दिन दिल्ली में हो रही है दूसरी चीज़ अध्यक्ष महोदय, हां अभी-अभी मैं बता रही हूं अभी उस पर आयेंगे मैंने तो अभी अपनी बात रखी है दूसरी बात अध्यक्ष महोदय, ये समस्या इतनी व्यापक है ये दो और तरीकों से पता चलता है अगर आप देखिये आजकल काफी सारे अखबार एक पेज़ रखते हैं दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों की समस्याओं के लिये, अक्सर आप देखिये तो अब रोज़ जो समस्यायें अखबार रख रहे हैं वो पानी से सीवर से सीवर ओवरफ्लो से, पानी की पाइप लाइन की लिकेज से जुड़ी हुई आ रही हैं। इंसान जल बोर्ड का अपना जो grievance redressal portal है 1916 अचम्भे की बात है अध्यक्ष महोदय की आज के दिन में उसमें 10 हज़ार से ज्यादा पैंडिंग कम्प्लेंट्स हैं मैंने कई बार जो लगातार कम्प्लेंट्स आईं हैं मैंने जल बोर्ड के सीईओ को भेजी हैं, जल बोर्ड के मैम्बर्स को भेजी हैं इनैक्ट जब से कम्प्लेंट्स की संख्या बढ़ने लग गई तो मैंने सारे जल बोर्ड के अधिकारियों को आदेश किया की सब अधिकारियों को रोज़ सुबह अपने इलाके का इन्स्पैक्शन करना है। मैंने आदेश दिया की सीईओ को भी कम से कम हफ्ते में दो बार और सारे जल बोर्ड के मैम्बर्स को कम से कम हफ्ते में तीन बार ग्राउंड पर जाना होगा इन्स्पैक्शन करनी होगी ग्राउंड की परिस्थितियों को समझना होगा। इन ऑफिसरों को अध्यक्ष महोदय मुझे ये रिपोर्ट हर मंडे को देनी थी कि पिछले हफ्ते की क्या-क्या इन्स्पैक्शन्स हैं। अध्यक्ष महोदय, ये शर्म की बात है कि पिछले दो महीने में एक भी बार जल बोर्ड के सीईओ की कोई इंस्पैक्शन

रिपोर्ट मेरे पास नहीं आई है अगर ऑफिसर अपने कमरों से बाहर निकलेंगे नहीं देखेंगे नहीं की प्रॉब्लम क्या हो रही है तो समस्यायें कैसे सॉल्व होंगी इसलिये अध्यक्ष महोदय कल ही मैंने जो मेरे पास 80 कम्प्लेंट्स आई हैं क्योंकि अब ये साफ हो गया है कि जल बोर्ड के सीईओ इन समस्याओं को सुलझाने में अक्षम हैं उनसे नहीं हो रहा है बार-बार निर्देश के बाद भी नहीं हो रहा है इसलिये कल जो मेरे पास 80 कम्प्लेंट्स आईं थीं वो सारी की सारी मैंने चीफ सेक्रेटरी को फोर्वड करीं, चीफ सेक्रेटरी दिल्ली सरकार के जो सारे ऑफिसर हैं उनके अध्यक्ष हैं उनके सीनियर मोस्ट ऑफिसर हैं और मैंने चीफ सेक्रेटरी की पर्सनल रिस्पोंसिब्लेटी फिक्स करी है कि इन समस्याओं को उनको सुलझाना है। उनको दो आदेश दिये गये हैं। उनको पहला आदेश दिया गया है उनको पहला आदेश दिया गया है अध्यक्ष महोदय कि जो भी ये समस्यायें हैं उनको 48 घंटे के अंदर-अंदर resolution होना है जहां पर पानी की पाइप लाइन लीक है, जहां पर सीवर ओवरफ्लो कर रहा है और दूसरा 7 वर्किंग डेज़ के अंदर-अदंर उसका जो लोंग टर्म सोल्युशन है उसकी भी शुरूआत होनी जरूरी है क्योंकि जैसे अभी बिष्ट साहब ने भी बताया की एक तो ये है की जब पानी की पाइप लाइन लीक हो रही है तो तब हम उसे रिपेयर कर दें लेकिन जब तक वहां पर पानी की पाइप लाइन रिप्लेस करने का काम नहीं होता 5 दिन बाद फिर से वो बहेगी, 10 दिन बाद फिर से वो बहेगी तो इसलिये मैंने एज़ वॉटर मिनिस्टर चीफ सेक्रेटरी को कहा है कि उनकी पर्सनल रिस्पोंसिब्लेटी रहेगी और मैं जो अभी हमारे चीफ व्हीप दिलीप पाण्डेय

जी ने जो resolution रखा है हाउस में मैं उस बात से पूरी तरह से सहमत हूं कि चीफ सेक्रेटरी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी होनी चाहिये। मैं ये भी रिक्वेस्ट करूंगी की जो शिकायतें आपके पास आई हैं उनके साथ-साथ जो शिकायतें मेरे पास आ रही हैं और मैं भी चीफ सेक्रेटरी को भेज रही हूं उनको भी आप जो उनको चिट्ठियां भेजें उसमें शामिल किया जाये और उसकी भी जो पूरा चिट्ठा है जो अपडेट है जो हम अगले हफ्ते विधानसभा का सत्र इस इश्यू इस पर बुलायेंगे उस पर भी चीफ सेक्रेटरी अपना पक्ष रखेंगे। देखिये, ये किसी पक्ष या विपक्ष की बात नहीं है ये दिल्ली के लोगों की समस्या है और अभी अजय महावर जी ने भी कहा की अगर किसी ने भी कोई गलती करी है तो उस पर एक्शन होना चाहिये। हम सबको यहां पर दिल्ली की जनता ने चुनकर भेजा है आज जो काम भी होने हैं वो दिल्ली की जनता के टैक्स के पैसे से होने हैं तो अगर दिल्ली के लोग परेशान हैं अगर दिल्ली के लोग सफ़र कर रहे हैं तो जवाबदेही होनी पड़ेगी, एक्शन होना पड़ेगा तो मेरा आपसे ये भी रिक्वेस्ट है की जो resolution दिलीप पाण्डेय जी ने रखा है उसमें ये भी पक्ष जोड़ा जाये की जो भी ऑफिसर इन काम में डिलेज़ के लिये इन प्रॉब्लम्स के ना सोल्व होने के लिये जिम्मेदार है चीफ सेक्रेटरी को कहा जाये की उन पर इन्क्वायरी हो और उन पर एक्शन जल्द से जल्द होना चाहिये, धन्यवाद अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्षः इस संकल्प पर।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: संकल्प पर वोटिंग से पूर्व मैं एक विषय रखना चाह रहा हूं अभी मोहन सिंह बिष्ट जी ने बोला, संजीव जी, संजीव जी दो मिनट मैं गंभीर बात कर रहा हूं संजीव जी प्लीज़। मोहन सिंह बिष्ट जी ने बोला की हमारे ए.ई., जे.ई. ट्रांसफर कर दिये गये हैं। नरेश जी ने बोला अन्य सदस्यों ने भी लिखकर दिया है। मेरे यहां से भी मोहन जी सुन लीजियेगा ए.ई., जे.ई. ट्रांसफर हुये, ठीक गर्मियां शुरू होने से पहले। इसके पीछे किसकी मंशा है क्या जल बोर्ड के चेयरमैन ने ट्रांसफर किये हैं या मंत्री महोदय ने ट्रांसफर किये हैं, सीईओ ने ट्रांसफर किये हैं ये आप भी जानते हैं मैं भी जानता हूं, आप भी जानते हैं मैं भी जनता हूं। जल बोर्ड के अधिकारियों ने किये हैं और हम यहां बैठकर जल बोर्ड के अधिकारियों को बचायेंगे। दिल्ली की जनता देखेगी, समझेगी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: भई राजेश जी मुझे बात पूरी करने दो ये बात ठीक नहीं है। आप विपक्ष के लोग जल बोर्ड के अधिकारियों को बचायेंगे तो दिल्ली की जनता पर और बड़ा कुठारघात कर रहे हैं और दिल्ली की जनता इसको समझ रही है। ये मेरे यहां के 29 काम हैं विधानसभा के जिसमें 07 के वर्कआर्डर हुये हुये हैं अंडर टेंडर हैं टेंडर खुल चुके हैं लेकिन काम नहीं हो रहा जिनके वर्क आर्डर हो गये हैं उनके पैसे दिये जा चुके हैं। अभी बिष्ट जी सुन लीजिये नहीं मेरी बात सुन लीजिये एक बार, हां मैं उसी की बात कर रहा हूं उसी की बात कर रहा हूं। 7 हैं जिनके वर्क आर्डर हो चुके हैं दिल्ली सरकार पेमेंट

दे चुकी है ठेकेदार काम नहीं शुरू कर रहे हैं क्योंकि ठेकेदारों की हाई कोर्ट के आदेश के बाद भी पेमेंट नहीं हुई, ये स्थिति दिल्ली जल बोर्ड की बन गई है। मंडे को जल बोर्ड के अधिकारियों को विधानसभा में बुलाया जो 280 में अब तक समस्यायें आई हैं ये आये हैं बातचीत करेंगे उनसे सारी बैठकर। मैं कुछ विधायकों को बोलूंगा वो भी उस मीटिंग में आ सकेंगे। अब दिलीप पाण्डेय जी द्वारा जो संकल्प सदन में रखा गया है सदन पटल पर

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

संकल्प पास हुआ।

अब सदन की बैठक, ध्यान से सुन लीजिये फिर दिक्कत होगी। सदन की बैठक 15 तारीख को 11.00 बजे भी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः भई राजेश जी संकल्प अब मैंने बोल दिया ना जी जनता देख रही है, वो ना कर रहे हैं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अभय जी बैठ जाईये, अभय जी आप बैठ जाईये।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अभय जी आप मेरे पास आना, मेरी विधानसभा के ये काम नहीं हो रहे तब बात करूंगा आपसे अब आना मेरे पास।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः बैठिये।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः भई मैं माननीय सदस्यों।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अरे भई बैठिये ना अब। बैठते क्यों नहीं है। रोहित जी महरोलिया जी बैठ जाइये। रोहित जी बैठ जाइये। रोहित जी मैं, जय भगवान जी बैठिये। रोहित जी बैठिये। बैठिये साहनी जी।

...व्यवधान...

(विपक्ष के माननीय सदस्य सदन में शोर शराबा करने लगे।)

माननीय अध्यक्षः अब माननीय मंत्री श्री कैलाश गहलोत जी सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्री, कार्यसूची में दर्शाये गए अपने विभाग से सम्बन्धित दस्तावेजों की प्रतियां सदन पटल पर प्रस्तुत करेंगे।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः महरोलिया जी आप बैठ जाईये। आप बैठ जाईये, बोलने दीजिए उनको। दिल्ली की जनता देख रही है सदन छोड़कर जा रहे हैं वो।

(विपक्ष के सभी माननीय सदस्य सदन छोड़कर बाहर चले गए)

माननीय अध्यक्षः आप समझते नहीं है बात को।

माननीय सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्री (श्री कैलाश गहलोत): अध्यक्ष महोदय मैं आपकी अनुमति से कार्यसूची के बिन्दू क्रमांक-2 के उपबिन्दू-2 में दर्शाये गए दस्तावेजों की अंग्रेजी एवं हिन्दी प्रतियां सदन पटल पर प्रस्तुत करता हूं।

II जियोस्पासियल दिल्ली लिमिटेड के वर्ष 2017-18 से 2020-21 हेतु 10वें से 13वें वार्षिक प्रतिवेदन की हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रतियां।[1]

माननीय अध्यक्षः अब श्रीमती आतिशी माननीय ऊर्जा मंत्री कार्यसूची में दर्शाये गए अपने विभाग से सम्बन्धित दस्तावेजों की प्रति सदन पटल पर पस्तुत करेंगी।

माननीया ऊर्जा मंत्री (श्रीमती आतिशी): अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से कार्यसूची के बिन्दू क्रमांक-2 के उप बिन्दू-1 में दर्शाए गए दस्तावेज की अंग्रेजी एवं हिन्दी प्रति सदन पटल पर प्रस्तुत करती हूं।

---

[1] दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23270 पर उपलब्ध।

I दिल्ली विद्युत विनियामक आयोग (डीईआरसी) के वर्ष 2022-23 हेतु वार्षिक लेखा प्रतिवेदन की हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रतियां।[2]

माननीय अध्यक्षः बजट पर चर्चा। श्रीमती आतिशी जी माननीय वित्त मंत्री द्वारा दिनांक 04 मार्च, 2024 को प्रस्तुत किये गए वार्षिक बजट 2024-25 पर चर्चा आरम्भ होगी। श्री ॠतुराज गोविंद जी। इसको बहुत संक्षेप में बोलेंगे अपनी बात, प्लीज।

श्री ॠतुराज गोविंदः बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, आपने इतने ऐतिहासिक बजट पर मुझे बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष जी, हम लोग जब से हम लोगों ने पढ़ना शुरू किया था अंत्योदय सुनते आये हैं। अंत्योदय करेंगे, अंत्योदय करेंगे श्यामा प्रसाद मुखर्जी बहुत समय से बोलते आये, भाजपा के लोग बोलते आये। लेकिन अंत्योदय का जो असली मतलब होता है पंक्ति में खड़ा हुआ अन्तिम व्यक्ति की चिंता करना उसके बारे मे सोचना उसकी तकलीफ के बारे में सोचना और उसके लिए काम करना। उसको करने का काम किसी ने किया है तो वो माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी ने पिछले नौ सालों से लगातार किया है और दसवें बजट में भी वो साफ झलक रहा है कि जिस तरीके से मैडम ने कहा कि राम जो है सो राम राज्य की जो अवधारणा के ऊपर में जो ये बजट रखा गया है। एक माँ-बाप भी अध्यक्ष महोदय, अपने उस बच्चे की चिंता सबसे ज्यादा करते हैं जो कमजोर होता है। यानि की जो आर्थिक रूप से कमजोर होता है किसी वजह से कमजोर होता है उसकी चिंता सबसे ज्यादा करते हैं। आज मुझे

[2] दिल्ली विधन सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23271(1-7) पर उपलब्ध।

खुशी इस बात की है अध्यक्ष महोदय कि पिछले नौ साल से तो लगातार हम लोग देख ही पा रहे हैं लेकिन दसवें साल भी दिल्ली के अंदर में सबसे कमजोर लोग सबसे पिछड़े लोग कहां रहते हैं तो कच्चे कालोनियों में रहते हैं। आपको जे.जे. कलस्टर्स में रहते है। resettlement colonies में रहते हैं। आज मुझे खुशी इस बात की है इस सदन के अंदर जो बजट पेश किया गया है उसके अंदर और पिछले नौ सालों के अंदर भी किस तरीके पंक्ति में खड़े हुए अंतिम व्यक्ति का ख्याल सबसे ज्यादा रखा गया अध्यक्ष महोदय और उनकी बुनियादी सुविधाओं पर बुनियादी जरूरतों पर इतना काम किया गया है, इतना काम किया गया है। सरकारें तो पहले भी थी अध्यक्ष महोदय, लेकिन कच्ची कालोनी में रहने वाले लोगों को थर्ड क्लास सिटीजन की तरह ट्रीट किया जाता था। पीने के पानी के टैंकरों के पीछे महिलायें लाइन लगाकर खड़ी रहती थी। चार-चार बजे सुबह इंतजार करती थी कि कब टैंकर आयेगा और कब उससे पीने का पानी मिलेगा। 1795 कच्ची कालोनियों के अंदर में घर-घर, घर-घर, घर-घर पीने के पानी को पहुंचा करके खास करके महिलाओं को सम्मान देने का काम किया। टैंकरों से मुक्ति देने का काम हमारे माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी ने किया है, अध्यक्ष महोदय। इसके साथ-साथ बुनियादी चीजें। पहले ड्रेनेज सिस्टम नहीं होता था अध्यक्ष जी। लोग पच्चीस गज, तीस गज का जो मकान बनाते थे उसके आगे सोखता बनाते थे, सोखता यानि कि जो पानी इस्तेमाल करेंगे वो पानी वहीं पर सूख जायेगा। क्योंकि ड्रेनेज सिस्टम नहीं था, कोई नेट वर्क नहीं था। अध्यक्ष जी हमारे मुख्यमंत्री

अरविंद केजरीवाल जी ने कच्ची कालोनियों के अंदर इतना काम किया, इतना काम किया कि हर कॉलोनी के अंदर में सड़कों का काम नालियों का काम, सीवर का काम, कर–करके बुनियादी सुविधाएं देने का काम हमारे मुख्यमंत्री जी ने किया है। आज अगर एक सर्वे करवाया गया, हम लोगों ने भी किया और रिपोर्ट्स आती है कि कच्ची कॉलोनी के अंदर में अध्यक्ष जी जो लोग रहते है वो 80 परसेंट से ज्यादा लोग 20 हजार रुपये से कम महीना कमाते हैं। मतलब मैक्सिमम जो इन्कम है 80 प्रतिशत से ज्यादा लोगों का वो मात्र 20 हजार रुपये तक की ही होती है। आप सोचिये कि जो परिवार मात्र 20 हजार रुपया महीना कमा रहा है, वो अपने बच्चों की ीस अफोर्ड नहीं कर सकता था। इसीलिए उसकी मजबूरी थी टीना टप्पर के सरकारी स्कूल में पढ़ाना। वो जो है सो अपने बच्चों के लिए ीस नहीं अफोर्ड नहीं कर सकता था। पेरेंट्स के लिए दवाइयां अफोर्ड नहीं कर सकता था। उनकी हालत बहुत खराब थी। हमारे मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी ने उस व्यक्ति को उस परिवार को जो कि मात्र 20 हजार रुपया महीना भी नहीं कमा पाता था उसके लिए मोहल्ला क्लीनिक खोल करके उसको दवाई का इंतजाम करके दिया। उसके बच्चों के लिए अच्छे सरकारी स्कूल का इंतजाम करके दिया। उसके अस्पताल में फ्री इलाज का इंतजाम करके दिया और इतना ही नहीं है जो महिलाओं की जो फ्री बस सर्विसेज है उससे आज हमारे यहां से लोग दूर–दूर तक काम पर जा पाते हैं क्योंकि उनको बसों में अच्छी सुविधा मिलती है। सीसीटीवी कैमरे लगे हुए है। पैनिक बटन लगे हुए है, मोहल्ला मार्शल्स थे, उसके बस के मार्शल्स थे

और वो दूर तक जा पाती है देर रात तक लौट पाती है और सुरक्षित महसूस करती हैं। तो महिला सुरक्षा, महिला सम्मान ये दोनों को मिलाकरके और पंक्ति में खड़े हुए अन्तिम व्यक्ति का ध्यान रख करके जो ये बजट लगातार मैं देख रहा हूं। बजट होना भी ऐसा चाहिए जो पंक्ति में खड़ा हुआ अन्तिम व्यक्ति का चिंता करे उसके लिए समाधान करे और उनका सम्मान करे और सबसे बड़ी बात ये होनी चाहिए कि भई उनके जीवन में कितना परिवर्तन आ पाता है, वो बजट का असल उद्देश्य होता है अध्यक्ष जी। मुझे खुशी है इस बात को बताते हुए कि कच्ची कॉलोनी में रहने वाले 50 से 60 लाख लोगों के जीवन के एक बड़ा परिवर्तन आया है। क्योंकि जो महिलायें पहले पानी के टैंकरों के पीछे भागती थी आज वो पानी टैब से भर पा रही है। अच्छा पानी मिल पा रहा है। उनको घर-घर तक मिल पा रहा है और सबसे बड़ी बात है कि पूरे किराड़ी के अंदर में पूरे दिल्ली की कच्ची कालोनियों के अंदर में हर जगह पर, हर मोहल्ले में, हर नुक्कड़ पर, हर कॉलोनी के अंदर में सीवर का काम हो रहा है। जिससे कि उनको उनको बेहतर जीवन मिल पायेगा। उनके जीवन में एक बहुत बड़ा आमूलचूल परिवर्तन आ रहा है। आज हर परिवार को आप सोचिये जैसा कि मैने कहा कि 80 प्रतिशत परिवार जो 20 हजार रुपया भी महीना मुश्किल से नहीं कमा पा रहा है अगर उसको हर महीने सरकारी योजनाओं से माननीय मुख्यमंत्री केजरीवाल जी की योजनाओं से अगर आठ से दस हजार रूपया महीना अगर उसके पास बचता है तो उस व्यक्ति की जो buying capacity है वो बढ़ती है और जब buying capacity बढ़ती है

तो उसकी बीस हजार रुपया महीना कमाने वाला परिवार अगर उसको दस हजार रुपया सरकार की तरफ से बचे, सरकार की योजनाओं से अगर बचे तो सोचिये कि उसकी इन्कम लगभग डबल हो जाती है। buying capacity बढ़ती है उससे इकॉनोमी के अंदर भी एक बहुत बड़ा जो है सो बदलाव आता है। एक साईकिल जो है पूरा का बढ़ता है क्योकि उन पैसों से वो परिवार अपने बच्चों के लिए ५ल खरीदेगा, कपड़े खरीदेगा और चीजें खरीदेगा। तो मार्केट के अंदर भी उसका जो है जो इकॉनोमी के अंदर में बहुत बड़ा आता है और सबसे बड़ी बात है कि इस परिवार को माननीय मुख्यमंत्री अरविंद जी की इन योजनाओं की वजह से ये बढ़ती हुई मंहगाई जो है उससे लड़ने की ताकत मिलती है। उसकी क्षमता बढ़ती है, वो लड़ पा रहा है और रही बात बढ़ती हुई महंगाई की तो दिल्ली के अंदर, दिल्ली के अंदर में देश के अंदर सबसे कम महंगाई दर रखकर भी हमारी सरकार ने बहुत बड़ा काम करने का काम किया है और सबसे बड़ा मास्टर स्ट्रोक तो मैं ये कहूंगा ये जो महिलाओं को ये मुख्यमंत्री महिला सम्मान योजना यानि की सोचिये कि अभी तक आठ से दस हजार रुपया जो बच पा रहा था एक परिवार को, हर परिवार में दो से तीन महिलाएं तो होती है ही है, कम से कम होती है तो उस परिवार को दो से तीन हजार रुपया तो मिनिमम हर परिवार को जो है सो मिल पायेगा। उससे सोचिये कि कितना भला हो पायेगा। आज बिजली की बात करें, पानी की बात करें, मोहल्ला क्लीनिक की बात करें, स्कूल की बात करें, अस्पताल की बात करें, सीसीटीवी कैमरा और मुख्य मंत्री स्ट्रीट लाईट के जरिये उनको

सिक्योर sense of security उनके अंदर में आई है। साथ में महिला स्क्योिरिटी के साथ-साथ महिला सम्मान जो इन्होंने देने का काम किया है इससे सबसे ज्यादा भला और सबसे ज्यादा अगर जीवन मे परिवर्तन कहीं आ रहा है तो उन गरीब लोगों के अंदर में आ रहा है जो कच्ची कॉलोनी, जेजे कलस्टर, resettlement कॉलोनी में रहती है और सबसे बड़ा जो अंत्योदय करने का काम किया है। जैसा कि मैने शुरूआत में कहा एक माँ-बाप भी अपने सबसे कमजोर बच्चे का ध्यान, सबसे ज्यादा रखते हैं और हमारे मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी ने लगातार नौ सालों से तो बजट जो लेकर आये थे उसमें तो किया ही दसवें बजट में भी सबसे ज्यादा ध्यान कच्ची कॉलोनी में रहने वाले पंक्ति में खड़े हुए अन्तिम व्यक्ति का ध्यान रखा। महिला सम्मान का भी ध्यान रखा, महिला सुरक्षा का भी ध्यान रखा।

माननीय अध्यक्षः ऋतुराज गोविन्द जी कन्क्लूड करिये।

श्री ऋतुराज गोविन्दः हर व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन आ सके।

माननीय अध्यक्षः प्लीज कन्क्लूड।

श्री ऋतुराज गोविन्दः इस बात का ध्यान रखा। मैं विशेष रूप से माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी को मैं सभी कच्ची कालोनियों में रहने वाले मेरे 50 लाख प्रवासी भाईयों-बहनों की तरफ से मैं सलाम करता हूं। धन्यवाद करता हूं और हमेशा ये ही कहता हूं कि कच्ची कालोनी में रहने वाले गरीब प्रवासियों के लिए हमारे मुख्यमंत्री केजरीवाल

जी किसी उससे कम नहीं है। हमेशा उनका ध्यान रखा है। उसका मैं बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं। जय हिन्द।

माननीय अध्यक्षः श्री संजीव झा जी। बहुत संक्षेप में संजीव जी।

श्री संजीव झाः बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय कि आपने इस बजट पर मुझे बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष महोदय जब माननीय वित्त मंत्री इस बजट को पेश कर रही थी तो ना केवल उन्होंने 2023-24 का आंकड़ा पेश किया बल्कि दस साल में जो एक खांचा विकास का खींचा गया उसका एक विस्तृत विवरण भी था। उस खांचे में दस साल में एक नई राजनीति से कैसे अन्तिम व्यक्ति तक फायदा पहुंच सकता है, उसका एक विस्तार से उन्होंने इस योजना को बताया और उन्होंने कहा कि ये बजट प्रभू श्री राम के चरणों में समर्पित है और इसीलिए इन्होंने कहा कि ये राम राज्य का बजट है। राम राज्य के इसी बजट में जब माननीय वित्त मंत्री जी विस्तार से चर्चा कर रही थी तो इसी सदन में माननीय मंख्यमंत्री जी ने मर्टिन लूथर का एक कोट उद्धत करते हुए उन्होंने कहा था कि सरकार कोई भी हो उसकी जिम्मेदारी है कि अपनी योजना में ज्यादा जगह उसको दे जिसको ऊपर वाले ने कम दिया है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को पूरे केबिनेट को धन्यवाद देता हूं कि चाहे वो बिजली हो, पानी हो, शिक्षा हो, स्वास्थ्य हो, बसों में यात्रा हो आपने उन तबकों को दिया है फायदा जिनको ऊपर वाले ने कम दिया है और जब आपने ये एक मॉडल पेश किया तो उससे फिर जैसा अभी ऋतुराज भाई कह रहे थे वो इकॉनोमी में रिफ्लैक्ट भी हो रहा है कि अगर अन्तिम व्यक्ति तक आप कुछ फायदा

पहुंचाते हैं तो इकॉनोमी को फायदा कैसे होता है। हालांकि कुछ चर्चा इन्होंने जरूर किया कि आज तक जितनी भी सरकारें है वो कहता है कि top to bottom आप इंडस्ट्री को मजबूत कर दो तो रोजगार मिल जायेगा। रोजगार मिल जायेगा तो हो सकता है कि देश मजबूत हो जायेंगे। तो मुझे लगता है कि आप दस बीस कम्पनियों को सैंकड़ों हजारों, करोड़, लाखों रुपये का टैक्स का रिबेट दे देते हो, बदले में दस बीस लाखों लोगों को नौकरी मिल जाती है। अरविंद केजरीवाल जी ने एक नया मॉडल दिया जिसको हम कहते हैं कि bottom of economy जिसमें इन्होंने कहा कि अन्तिम व्यक्ति तक कुछ पैसा दे दो। अगर आप उस पर कुछ पैसा देते हो तो जाकरके वो सामान खरीदता है। जा करके वो सामान खरीदता है तो बाजार में डिमांड आता है। बाजार में डिमांड आता है तो फिर सप्लाई बढ़ेगी। सप्लाई बढ़ेगी तो कारखाना खुलेंगे। कारखाने खुलेंगे तो फिर लोगों को नौकरी मिलेगी और उससे दिल्ली के इकॉनोमी में दिखा कि प्रति व्यक्ति आय किस तरह से दिल्ली में बढ़ा। प्रति व्यक्ति किस तरह से inflation दिल्ली ने कन्ट्रोल करके रखा। तो एक ये बड़ा मॉडल जो अरविंद केजरीवाल जी ने इस देश को दिया है, मुझे लगता है कि इसी से देश की इकॉनोमी भी और देश इसी से आगे बढ़ेगा। मुझे ये लगता है देखिये जब हम किसी भी स्टेट के बजट को या देश के बजट को देखते हैं तो तीन चीजें बड़ा इम्पोर्टेंट होता है। एक कि आपका debt to GSDP ratio क्या है, दूसरा interest payment और revenue receipt क्या है और फिर आप का deficit क्या है। मैं बताऊं आपको कि debt to GSDP ratio की बात करें तो 2012-13 में

ये 8 परसेंट था, अभी-अभी चार परसेंट है, interest payment to revenue receipt 2012-13 में ये 13 परसेंट था आज 6.4 परसेंट है। deficit की बात करें तो 13-14 में ये तीन हजार 942 करोड़ था यानि लगभग 12 परसेंट का deficit था। आज हम सरप्लस हैं। तो मुझे लगता है कि ये जो दस साल में अरविंद केजरीवाल जी और उनकी पूरी केबिनेट ने जो चमत्कार किया है, अगर देश उससे सीखता अगर तो मुझे ये लगता है कि दस साल में जो अरविंद केजरीवाल जी कहते भी हैं कि दस साल में हम देश कहां से कहा बढ़ा सकते हैं लेकिन दुर्भाग्य कि सीखने के बजाए vendetta politics होती रही कि अगर अच्छा काम कर रहे हैं तो किस तरह से अच्छे काम को दबाया जाये। किस तरह से रोका जाये। चूंकि 2014 में प्रधान मंत्री जी बने थे दस साल उनके भी हो गए। उन्होंने कहा था कि सौ दिन में हम काला धन वापिस ले आयेंगे। बड़े-बड़े पफैसले लेंगे। क्या फैसला लिया था उन्होंने बड़ा फैसला, नोटबंदी का फैसला। इस सदन को मैं एक जानकारी देता हूं। मैं एक दिन रिसर्च कर रहा था कि प्रधान मंत्री जी को नोटबंदी का ये ख्याल आया कहां से। तो मैं जब बहुत रिसर्च करने लगा मुझे पता चला कि महाराष्ट्र में लातूर एक जगह है। लातूर में एक मैकेनिकल इन्जीनियर अर्थ क्रान्ति नाम का एक वेबसाइट चलाता है। उस अर्थ क्रान्ति के जरिये वो कहा कि एक व्यक्ति की आय अगर डेढ सौ रूपया है तो सौ रूपये से ज्यादा का नोट नहीं होना चाहिए और उसने कहा कि जितनी बातें प्रधान मंत्री ने नोटबंदी के टाइम कहा वो सारी बातें आप जाइये, अर्थ क्रान्ति बेवसाइट पर सारी बातें लिखी हुई हैं। तो

उसने अनिल बोकिल ने एक स्टेटमेंट दिया था 2017 में इन्टरव्यू में कहा कि 2013 में प्रधानमंत्री प्रत्याशी बने थे तो मैं उनसे मिलने गया मैने उनको कहा कि इस देश में सौ रूपये से ज्यादा का नोट नहीं होना चाहिए de-monetize कर दीजिए। अब वो सौ रूपये के नोट को de-monetize कर दीजिए और कहा प्रधानमंत्री से मैं आठ मिनट के लिए मिलने गया था, 90 मिनट वो मुझसे मिले और 2015 में जब ये de-monetize हुए तो जितनी भी बातें वो अर्थ क्रान्ति में लिखा हुआ है कि टेरेरिस्ट फंडिंग बंद हो जायेगी, जितनी बातें उसने लिखा था जो प्रधानमंत्री जी ने कहा वो सारी बातें लिखी हुई थी और समझिये। मैं कहना ये चाह रहा हूं कि एक अगर विजनलैस व्यक्ति, एक कम पढ़ा लिखा व्यक्ति अगर प्रधान मंत्री बन जाए अब सोचिए अगर कोई मन मोहन सिंह जी को कोई ये कहने आता कि भई इस तरह का सौ रूपये का नोट होना चाहिए de-monetize कर दीजिए, काला धन वापिस आ जायेगा। इकॉनोमी में ये सब होता है क्या? मान लिजिए अरविंद केजरीवाल जी वहां मंत्री होते अगर वो व्यक्ति आता ये कहने के लिए कि इस सब से इकॉनोमी ठीक हो जायेगा, तो क्या वो मानते, नहीं मानते। दुर्भाग्य, उसका दुष्परिणाम क्या हुआ, पूरे देश ने देखा कि de-monetization के बाद किस तरह से इस देश की इकॉनोमी धाराशाही हो गया। दूसरा बड़ा फैसला उन्होंने क्या लिया। दूसरा फैसला लिया कि हम जीएसटी को इम्पलीमेंट करेंगे। अब जीएसटी के bad implementation के कारण आप देखिये कि एमएसएमई बर्बाद हो गया। वो एमएसएमई जो आपके प्रोडक्शन का लगभग अगर एक्सपोर्ट की भी बात करें तो

एक्सपोर्ट का 40 परसेंट कन्ट्रीब्यूशन एमएसएमई का है। लगभग 10 करोड़ नौकरियां एमएसएमई दे रहा था। जीएसटी के bad implementation के कारण डेटा ये कहता है कि हर तीसरा एमएसएमई देश में बंद हो गया। तो एक बात मुझे बताईये कि आज उसके नुकसान जो देश को हो रहा है वो देश के सामने है। प्रधानमंत्री ने दो नारे दिये। कहा कि मेक इन इंडिया। अब देखिये बड़ा आश्चर्य लगेगा। नारा था मेक इन इंडिया का। मेक इंडिया का जो नारे का जो लोगो बनाया वो अमेरिकन फर्म था और उस मेक इन इंडिया में इन्होंने टारगेट रखा कि 16 परसेंट मैन्यूफैक्चरिंग को हम 25 परसेंट पहुंचायेंगे। आज देश में मैन्यूफैक्चरिंग 13 परसेंट है। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भर भारत करेंगे। जब आत्मनिर्भर भारत की बात उन्होंने करी तो देखा हमने कि पहले जो इम्पोर्ट था उससे ज्यादा इम्पोर्ट बढ़ गया। अगर इलैक्ट्रोनिक्स आईटम की इम्पोर्ट की बात करें तो 2013-14 में था ये 32.4 मिलियन डॉलर आज है ये 55.6 मिलियन डॉलर। तो अब समझिये कि किस तरह से एक विजनलेस प्राइममिनिस्टर से देश का नुकसान हो सकता है प्रधान मंत्री से दूसरा और उदाहरण आपको देखने को नहीं मिलेगा। एक बात बताइये, प्रधानमंत्री जी की पूरी टीम कहता। अमिताभ कांत जी, नीति आयोग के चेयरमैन है, उन्होंने कहा कि इंडिया में बड़ी डैमोक्रेसी है। there is too much democracy in India उन्होंने कहा कि nobody has the the political will and the courage to say that we want to support five companies so that they may compete global scenario तो आप पांच कम्पनी को मजबूत करके देश को आत्म निर्भर नहीं बना सकते। देश को आत्म

निर्भर बनाना है आपको एमएसएमई को मजबूत करेंगे चूंकि 2013–14 में consistently ये एमएसएमई 10 से 20 परसेंट ग्रोथ कर रहा था और 10 से 20 परसेंट जब ग्रोथ कर रहा था तो रूरल क्षेत्र में लोगों को नौकरियां मिल रही थी।

(समय की घंटी)

श्री संजीव झा: तो मैं कहना बस इतना ही चाहता हूं कि देश में अगर विजनलैस प्रधानमंत्री हो तो देश कहां से कहां पहुंच सकता है, देश इसका उदाहरण है। समय नहीं है तो मैं विस्तार से बताता कि किस तरह से ये जीडीपी के डेटा आ रहे हैं वो डेटा कैसे फर्जी है। किस तरह से उन्होंने तमाम तरह के जो आप ग्रोथ के आंकडे दिखा रहे है वो सारे फर्जी हैं। तो मुझे लगता है कि ये पूरी सरकार ही फर्जी है और खाली जितनी भी योजनाएं देख लीजिए। योजनाएं सारी कांग्रेस गवर्नमेंट की थी, उनका नाम बदल दिया। तो ये कई लोगों ने ठीक लिखा है कि ये गेम चेंजिंग गवर्नमेंट नहीं है ये नेम चेंजिंग गवर्नमेंट है और इसका नुकसान देश को हो रहा है। तो आज मैं आदरणीय मुख्यमंत्री जी को विशेष धन्यवाद और आभार व्यक्त करता हूं कि आपने जो इस बार का बजट पेश दिया है, मैं वित्त मंत्री जी को भी शुभकामनाएं देता हूं। इस बजट से दिल्ली के अन्तिम व्यक्ति और अन्तिम महिला जो आपने एक हजार रुपये का जो आपने कहा है महिला सशक्तिकरण में हम देंगे, उससे बहुत उत्साहित लोग है। तरह–तरह के लोग प्लान कर रहे हैं। तो मैं आप सबको ढेर सारी शुभकामनाएं देता हूं। मुझे उम्मीद है कि दिल्ली के इस बजट से देश के प्रधानमंत्री,

देश की वो तमाम अन्य सरकारें सीख लें ताकि ये देश आगे बढ़े कि हम सब आगे बढ़ पायें। बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः श्रीमान मोहन सिंह बिष्ट जी।

श्री मोहन सिंह बिष्टः विजेन्द्र जी बोलेंगे।

माननीय अध्यक्षः मैने आपका नाम बोला है बोलिये। सिर्फ एक ही आदमी अलाऊ कर रहा हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अध्यक्ष जी बजट पर चर्चा..

माननीय अध्यक्षः कोई बात नहीं। विपक्ष के दो सत्ता पक्ष के दो लोग।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः पूरे बजट सत्र में।

माननीय अध्यक्षः कोई बात नहीं।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः पूरे बजट सत्र में...

माननीय अध्यक्षः नहीं बिधूडी जी डेली बोले हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः बजट पर चर्चा कराना है डेली कैसे बोलेगा कोई। एक बार ही बोलेगा।

माननीय अध्यक्षः कौन। बिधूडी जी बजट की चर्चा पर बोले हैं।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मेरी ओर से ये बोलेंगे। मैं तैयारी करके नहीं आया।

माननीय अध्यक्षः मोहन सिंह जी, प्लीज भाई साहब। देखिये मेरी बात सुनिये मोहन जी। एक सैकेंड मेरी बात सुन लीजिए। दो मिनट बैठिये प्लीज। सम्मानित तरीके से बैठिये। बैठिये विजेन्द्र जी। ये सब्जी मंडी नहीं है मेरी किचन की सब्जी खत्म हो गई तो मैं सब्जी मंडी लेने पहुंच गया। एक सैकेंड भई, तालियां मत पीटिये प्लीज। बात को पूरी होने दीजिए। ये सब्जी मंडी नहीं है मेरी किचन की।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्षः नहीं सुन लीजिए मोहन। मोहन जी सुन लीजिए। सुन लीजिए बात को एक बार।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः आपकी एब्सेंट में इनका नाम आया, मैं नाम बार बार नहीं बदलूंगा। आप नहीं थे यहां सदन में। आप नहीं थे सदन में। वॉकआउट किया तो आ जाते जब चर्चा शुरू हुई। नहीं मोहन सिंह जी, अगर मोहन सिंह जी ने बोलना है तो बोलेंगे, नहीं बोलना है तो मैं किसी को अलाउ नहीं करूंगा this is my final decision मोहन सिंह जी ने नाम भेजा अपना मैंने तुरंत लिखा है। आपने नाम भेजा है।

श्री मोहन सिंह बिष्टः सर लीडर होने के नाते मैं उनसे निवेदन कर रहा हूं वो अपनी बात रखेंगे.

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः नहीं not like that, नहीं आपको मेरा मानना पड़ेगा। मोहन सिंह जी देखिए।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैं आपका बिल्कुल इस चेयर का सम्मान करना पड़ेगा। मैं मानता हूं। सर मैं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं बिल्कुल अलाउ नहीं करूंगा। आपको बोलना है तो बोलिए प्लीज। आपने नाम भेजा।

...व्यवधान...

श्री मोहन सिंह बिष्टः एक सदस्य बोलने के लिए हमने उनको कहा है।

माननीय अध्यक्षः मैं अलाउ नहीं कर रहा। मैं एक मिनट का समय दे रहा हूं। एक मिनट आप बोलिए प्लीज।

...व्यवधान...

श्री मोहन सिंह बिष्टः नहीं मैंने नाम इनका दिया।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं विजेंद्र जी को अलाउ नहीं कर रहा। आप बोलिए। भई मैं उनको अलाउ नहीं कर रहा हूं। मैं केवल आपको अलाउ कर रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ता: मेरा क्या अपराध है, मेरा अपराध क्या है?

माननीय अध्यक्ष: जब बजट पर चर्चा शुरू हुई अंदर आ जाते। मैंने रोका था?

श्री विजेंद्र गुप्ता: अगर wash room जाना पड़ गया तो.

माननीय अध्यक्ष: आप आए मैं आपको अलाउ कर रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ता: washroom ना जायें, washroom ना जायें क्या?

माननीय अध्यक्ष: आप बोलिए, बोलना है बोलिए।

श्री मोहन सिंह बिष्ट: बोलो, बोलो।

माननीय अध्यक्ष: नहीं मैं उनको अलाउ नहीं कर रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ता: अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्ष: मैं अलाउ नहीं कर रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ता: अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्ष: मैं अलाउ नहीं कर रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ता: अध्यक्ष जी ये सदस्य के साथ एक तरह का भेदभाव है...

माननीय अध्यक्ष: मैं विजेंद्र जी मोहन सिंह बिष्ट जी को अलाउ कर रहा हूं, वो बोलें।

श्री विजेंद्र गुप्ता: मोहन सिंह बिष्ट जी लीडर हैं हमारे हम तो कह रहे हैं.

माननीय अध्यक्ष: तो मैं उनको अलाउ कर रहा हूं। एलओपी को अलाउ कर रहा हूं। भाई साहब मैं एलओपी को अलाउ कर रहा हूं।

श्री मोहन सिंह बिष्ट: सर हमने निवेदन किया है कि एक एक सबजैक्ट पर सब बोलेंगे।

माननीय अध्यक्ष: मोहन सिंह जी सदन का समय खराब हो रहा है। मैं आपको अलाउ कर रहा हूं आप बोलिए।

श्री मोहन सिंह बिष्ट: सर मैंने कहा ना।

माननीय अध्यक्ष: सम्मान से बोल रहा हूं बोलिए।

श्री मोहन सिंह बिष्ट: हमने पुनः तैयारी करने के लिए कहा था।

माननीय अध्यक्ष: नहीं मैं बिल्कुल अलाउ नहीं करूंगा।

श्री मोहन सिंह बिष्ट: सर मैंने उनको तैयारी करने के लिए कहा था।

माननीय अध्यक्ष: मैं केवल मोहन सिंह बिष्ट जी को अलाउ कर रहा हूं।

श्री मोहन सिंह बिष्ट: भई मैंने उनको तैयारी करने के लिए बोला।

माननीय अध्यक्षः जो सदन में समय पर आ गए थे।

श्री विजेंद्र गुप्ताः मेरे को किस बात की पनिश्मेंट है। अब आप ये बताइये।

श्री मोहन सिंह बिष्टः सर।

माननीय अध्यक्षः आप बैठेंगे।

श्री मोहन सिंह बिष्टः हां बिल्कुल बैठेंगे। आपका सम्मान करते हैं।

माननीय अध्यक्षः मैं बता देता हूं that will be my final decision.

...व्यवधान...

श्री मोहन सिंह बिष्टः सर हम सम्मान करते रहेंगे।

माननीय अध्यक्षः मेरी बात सुन लीजिए अजय जी फिर उसके बाद टिप्पणी करियेगा। जिस वक्त बजट पर चर्चा हुई।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः ये विषय बनेगा। अगर आपने मेरे को बोलने नहीं दिया।

माननीय अध्यक्षः हां बिल्कुल बनाईये जितने मर्जी आए बनाईये। जितने मर्जी आए बनाईये।

श्री विजेंद्र गुप्ताः एक भी सदस्य को नहीं बुलवाओगे तो ये विषय बनेगा। चुनौती देते हैं हम।

माननीय अध्यक्षः ऐसा है आप सदन छोड़ के चले गए थे सभी सदस्य।

श्री विजेंद्र गुप्ताः चुनौती देते हैं।

माननीय अध्यक्षः मोहन सिंह बिष्ट जी जैसे बजट पर चर्चा हुई वापिस आ गए। इन्होंने अपना नाम मेरे पास भेजा।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैंने नहीं भेजा। मैंने कोई नाम नहीं भेजा सर। मैंने कोई नाम नहीं भेजा।

माननीय अध्यक्षः नाम नहीं भेजा। मैंने लिख लिया। मैंने, सुन लीजिए बात को विजेंद्र जी मेरा मेरी बात पूरी सुन लीजिए, मेरी पूरी बात सुन लीजिए। आप बार बार डिस्टर्ब कर रहे हैं। मेरी पूरी बात सुन लीजिए। मोहन सिंह बिष्ट जी आए, मेरी ड्यूटी बनती है विपक्ष की ओर से कोई बोले। मैंने लिख लिया, आप तब आए हैं दो सदस्य

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अरे भई आप इस बात को छोड़िए, मैं उसकी चर्चा नहीं कर रहा हूं। मोहन सिंह जी आप बोलिए प्लीज। आप बोलिए, नहीं बोलना चाहते मत बोलिए।

श्री मोहन सिंह बिष्टः रिकवेस्ट की कि विजेंद्र गुप्ता जी हमारी ओर से विजेंद्र जी पक्ष रखेंगे बजट के उपलक्ष्य में।

माननीय अध्यक्षः नहीं मैं अलाउ नहीं कर रहा हूं।

श्री मोहन सिंह बिष्ट: नहीं सर, विपक्ष का बिल्कुल सर आप।

माननीय अध्यक्ष: कुछ भी कह लीजिए आप लोग।

श्री मोहन सिंह बिष्ट: हम लोग सदन से आपने बाहर कर दिया बजट पत्र के अंदर।

माननीय अध्यक्ष: मैंने कोई सदन से बाहर नहीं किया, ये आप गलत स्टेटमेंट दे रहे हैं। सदन आप छोड़ के गए हैं।

श्री मोहन सिंह बिष्ट: मैं व्यक्तिगत आप पे टिप्पणी नहीं कर रहा हूं। ये चेयर की।

माननीय अध्यक्ष: आप सदन छोड़ के गए हैं।

श्री मोहन सिंह बिष्ट: सर हम सम्मान कर रहे हैं चेयर का और ये

माननीय अध्यक्ष: श्रीमान राज कुमार आनंद जी, माननीय मंत्री महोदय श्रीमान राज कुमार आनंद जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: हां बिल्कुल। श्रीमान मंत्री महोदय, राज कुमार आनंद जी।

माननीय समाज कल्याण मंत्री (श्री राज कुमार आनंद): अध्यक्ष महोदय, आज के इस बजट सत्र में अपनी बात रखने का मौका देने के लिए आपका धन्यवाद। अध्यक्ष महोदय, आज का ये बजट सत्र

अरविंद केजरीवाल जी की सरकार का दसवां बजट सत्र है। पिछले 9 सालों से हमारी सरकार इस सदन के समक्ष अपना बजट रखती आ रही है। पीछे घूमकर जब मैं 9 साल के इतिहास पर, 9 साल की इस यात्रा पर अपनी नजर डालता हूं तो लगता है कि ये यात्रा हम दिल्ली वालों के लिए एक ऐसी यात्रा रही है जो हम सब दिल्ली वालों को अंधकार से रोशनी की तरफ ले जा रही है जो हमें निराशा से आशा की तरफ ले जा रही है, जो हमें नाउम्मीदी से उम्मीदों की तरफ ले जा रही है। 10 साल पहले दिल्ली विधान सभा के इसी सदन में जो बजट पेश किया गया था वह 30 हजार 940 करोड़ रुपये का था। आज जब इस सदन में दिल्ली विधान सभा का इस वर्ष का बजट पेश किया जा रहा है तो ये 76 हजार करोड़ रुपये का है। दस साल पहले दिल्ली का जीएसडीपी 4 लाख 15 हजार करोड़ रुपये का था जो आज बढ़ कर 11 लाख 8 हजार करोड़ रुपये का हो गया है। दस साल पहले दिल्ली में प्रति व्यक्ति आय 2 लाख 47 हजार रुपये थी जो आज प्रति व्यक्ति आय 4 लाख 62 हजार रुपये यानि दुगने से भी ज्यादा हो चुकी है। अध्यक्ष महोदय, ये सिर्फ आंकड़ों का परिवर्तन नहीं है यह व्यवस्था में आया परिवर्तन है। ये राजनीति में आया परिवर्तन है, यह नीयत में आया परिवर्तन है। अध्यक्ष महोदय, केजरीवाल सरकार ने यह साबित कर दिया है कि जनता को तमाम सुविधायें दे कर भी अर्थव्यवस्था को इस ऊंचाई पर पहुंचाया जा सकता है। उस दिन जब माननीय मंत्री आतिशी जी हमारी सरकार की तमाम उपलब्धियों को तथ्यों के साथ इस सदन के समक्ष रख रही थीं तब मुझे बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर की

वो बात याद आ रही थी जिसमें उन्होंने कहा था कि हमारा लोकतंत्र तभी सुरक्षित रह पायेगा जब हम आर्थिक और सामाजिक गैर बराबरी की खाई को पाट पायेंगे। अध्यक्ष महोदय, जब गरीब और वंचित वर्ग के बच्चे दिल्ली के सरकारी स्कूल में मुफ्त और इंटरनेशनल वर्ल्ड क्लास एजुकेशन पाते हैं तब आर्थिक और सामाजिक गैर बराबरी की खाई पटने लगती है। जब आम शहरी और खास शहरी दिल्ली के सरकारी अस्पतालों और मोहल्ला क्लिनिक में मुफ्त और गुणवता पूर्ण इलाज कराते हैं तब आर्थिक और सामाजिक गैर बराबरी की खाई पटने लगती है। जब हर दिल्ली वाले को 200 यूनिट बिजली फ्री और 20 हजार लीटर पानी फ्री मिलता है तब आर्थिक और सामाजिक गैर बराबरी की खाई पटने लगती है। जब बस में महिलाओं की यात्रा फ्री होती है तब आर्थिक और सामाजिक गैर बराबरी की खाई पटने लगती है। और अब जो इस बजट में नया प्रावधान हमारे दिल्ली के लोकप्रिय मुख्यमंत्री और पूरे हिंदुस्तान के चहेते आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल जी ने जो योजना लागू की है 'महिला सम्मान' एक हजार रुपये महिलाओं को देने की जो योजना लागू की है इस बजट से उससे तो पूरे देश में और पूरी दिल्ली में चर्चा है इससे आर्थिक और सामाजिक गैर बराबरी की खाई पटने लगती है। इस पर काफी डिबेट होती है अध्यक्ष महोदय कि आखिर ये सहायता करने से, ये पैसे देने से आर्थिक गैर बराबरी की खाई तो पटने लगती है लेकिन सामाजिक गैर बराबरी की खाई कैसे पटने लग जाती है। मेरा ये मानना है कि अगर आर्थिक रूप से लोग आगे बढ़ेंगे तो सामाजिक गैर बराबरी काफी हद तक कम हो जायेगी।

तो मैं बहुत बहुत धन्यवाद देता हूं अपनी वित्त मंत्री आतिशी जी को और मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी को ऐसा बजट लाने के लिये। जैसा कि हमारे भाई ने कहा अंतिम व्यक्ति को लाभ पहुंचता है, बहुत-बहुत धन्यवाद, शुक्रिया। जय भीम, जय भारत, जय संविधान।

माननीय अध्यक्षः श्रीमान गोपाल राय जी, माननीय विकास मंत्री।

माननीय विकास मंत्री (श्री गोपाल राय): माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने हमें बजट पर अपनी बात रखने का मौका दिया, इसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद। अध्यक्ष जी, दिल्ली के अंदर इस सदन में दिल्ली के मुख्यमंत्री माननीय अरविंद केजरीवाल जी के नेतृत्व में दिल्ली के पूर्व वित्त मंत्री माननीय मनीष सिसोदिया ने जिस आर्थिक संरचना की बुनियाद रखी थी इस बार के बजट में भी दिल्ली की वित्त मंत्री आतिशी जी ने जिस तरह से उस कारवां को आगे बढ़ाते हुए बजट प्रस्तुत किया है उसके लिये पूरी दिल्ली की तरफ से माननीय मुख्यमंत्री जी का, माननीय वित्त मंत्री जी का मैं तहे दिल से शुक्रिया अदा करना चाहता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के अंदर और पूरी दिल्ली के अंदर, पूरे देश के अंदर दिल्ली के बजट की चर्चा होती है और बल्कि पूरे देश के अलग-अलग राज्यों में दिल्ली का बजट एक बेंचमार्क बन चुका है। आम तौर पर दिल्ली के अंदर इस बजट में भी शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन के कारवां को कैसे आगे बढ़ाया जाये, स्वास्थ्य के मिशन को कैसे और तेज किया जाये, अनऑथराईज कालोनियों में विकास कैसे हो, गांव का विकास कैसे हो, बिजली जो फ्री दी जा रही है वो कैसे जारी रहे, पानी की कैसे व्यवस्था की जाये, सारी चर्चा है। अध्यक्ष

महोदय, मैं उसपे आऊंगा उससे पहले मैं इस सदन के सामने रखना चाहता हूं आमतौर पर ऐसा सोचा जाता है कि दिल्ली की सरकार, अरविंद केजरीवाल की सरकार दिल्ली के अंदर गरीब लोगों के लिये, मध्यम वर्गीय परिवार के लोगों के लिये काम करती है जिसकी झलक आपको इस बजट में मिलेगी। लेकिन अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात कहना चाहता हूं दिल्ली को खुशहाल बनाने के लिये, दिल्ली के अंदर कोई भी ऐसा परिवार नहीं है, कोई भी ऐसा परिवार नहीं है जो इस दिल्ली के अंदर रहता हो चाहे एक पटवारी हो, और चाहे इस देश के प्रधानमंत्री हों जो इस दिल्ली के अंदर रहते हैं, हर परिवार के अंदर अकेली देश की सरकार है जिसके काम का फायदा, जिसके काम की वजह से हर परिवार में खुशहाली आ रही है। अध्यक्ष महोदय, इस दिल्ली के अंदर देश की राजधानी है, आम आदमी पार्टी की सरकार बनने से पहले हर परिवार के अंदर बिजली जाती थी। आज दिल्ली का हर परिवार गरीबों के बच्चे, गरीब के परिवार के लोग तो बिना पंखे के, बिना एसी के भी अपनी जिंदगी गुजार लेते थे, लेकिन आज दिल्ली के अंदर हर परिवार चाहे अमीर से अमीर परिवार हो, उसको आज बिजली की चिंता नहीं होती है। दिल्ली के हर परिवार में 24 घंटे बिजली की अगर किसी ने गारंटी दिया है उन अमीरों के घर में भी खुशहाली पहुंचाने का काम किया है उसका नाम अरविंद केजरीवाल की सरकार है, ये इतिहास पहली बार बना है। आज 24 घंटे प्रधानमंत्री जी के घर में भी बिजली आती है, अरविंद केजरीवाल की वजह से आती है। पावरकट नहीं लगता है। और एक झुग्गी में रहने वाले सबसे गरीब

व्यक्ति के घर में भी 24 घंटे बिजली आती है तो अरविंद केजरीवाल की वजह से आती है। बात दोनों की एक ही तरह है प्रधानमंत्री के घर में भी फ्री बिजली आती है, और आज एक झुग्गी वाले के घर में भी फ्री बिजली आती है ये समानता का आर्थिक पैमाना अगर स्थापित किया है तो वो अरविंद केजरीवाल की सरकार ने किया है। अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के अंदर दिल्ली के लोग, न सिर्फ बिजली की बात है दिल्ली के अंदर आज अरविंद केजरीवाल जी की सरकार की वजह से चर्चाएं तो देश के अंदर बहुत सारी हो रही हैं दिल्ली में रहने वाला हर व्यक्ति चाहे अमीर हो, गरीब हो, हर व्यक्ति सांस लेता है। दिल्ली के अंदर जब अरविंद केजरीवाल जी की सरकार बनी अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के अंदर 365 दिनों में से 2015 में केवल 109 दिन थे जब दिल्ली के लोग अच्छी हवाओं को अपने सांस के माध्यम से अपने अंदर लेते थे। अध्यक्ष महोदय, जिस तरह से धीरे-धीरे, धीर-धीरे निरंतर सतत प्रयास किया गया, आज पिछले साल का आंकड़ा आया है पिछले साल 109 दिन जो 2015 में दिल्ली की सांसें अच्छी मिली थी, आज वो आंकड़ा 206 पहुंचा है। आज दिल्ली के अंदर आज लगभग 2015 में जब हमारी सरकार बनी उसके बाद से आज दिल्ली में अच्छी हवाओं के दिनों की संख्या डबल हुई है। आज इसका फायदा पूरी दिल्ली को अध्यक्ष महोदय मिल रहा है। हर परिवार के अंदर सांसों की खुशहाली आ रही है अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के अंदर आज चाहे अमीर घर की महिला हो, चाहे गरीब घर की महिला हो, दिल्ली के अंदर अगर चप्पे-चप्पे पर सीसीटीवी कैमरा लगा है, आज दिल्ली के अंदर

पुलिस की निष्क्रियता के बावजूद अगर आज दिल्ली के अंदर कहीं भी, कोई भी घटना होती है तो उसको आज किसी भी अपराधी को पकड़ने के लिये आज जो सुरक्षा की व्यवस्था की गयी है अध्यक्ष महोदय, आज ये हर गरीब के और हर अमीर के लिये काम किया गया। दिल्ली के अंदर आज एक एक करके, एक-एक करके, एक-एक करके जिस तरह से हर परिवार की खुशहाली के लिये काम किया जा रहा है अध्यक्ष महोदय, इस बजट ने उस कारवां को आगे बढ़ाया है। अध्यक्ष महोदय, आपसे मैं कहना चाहता हूं दिल्ली के अंदर एक अनोखा प्लान ले कर आया, दिल्ली की सरकार, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने फरिश्ते स्कीम, दिल्ली के अंदर अपने घर में चाहे कोई अमीर हो, चाहे गरीब हो जब सड़क पर आता है अध्यक्ष महोदय, आपने भी अपने नजरों से देखा होगा दिल्ली की सड़कों पर अगर किसी का एक्सीडेंट हो जाता लोग चारों तरफ से आते हैं, गाड़ियां रोकते हैं, झांकते हैं, देखते हैं, हमारा परिचित है या नहीं है और चुपचाप चले जाते हैं अध्यक्ष महोदय, कोई हाथ नहीं लगाता था क्योंकि उस समय तो कोई अमीर है या गरीब है इससे ?र्क नहीं पड़ता, सड़क पर वो अगर झटपटा रहा है, उसकी जिंदगी अपने अंतिम दौर में जूझ रही है, अध्यक्ष महोदय, फरिश्ते स्कीम अरविंद केजरीवाल की सरकार लेकर आई, दिल्ली के अंदर हजारों लोगों की जिंदगियां बचाने का काम किया अध्यक्ष महोदय, इसलिये मैं आपसे कहना चाहता हूं दिल्ली के अंदर इस बात की चर्चा तो आमतौर पर होती है, दिल्ली के अंदर हर परिवार चाहे सत्तापक्ष में बैठे लोगों का परिवार हो, चाहे विपक्ष में बैठे हुए

लोगों का परिवार हो, चाहे भाजपा का परिवार हो, चाहे कांग्रेस का परिवार हो, चाहे आम आदमी पार्टी के लोगों का परिवार हो, अमीर हो, गरीब हो, हिंदू हो, मुस्लिम हो, सिख हो, ईसाई हो, अगर हर परिवार में खुशहाली पहुंचाने का काम किया है अध्यक्ष महोदय उसका नाम अरविंद केजरीवाल की सरकार है और एक इतिहास बना है। अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के अंदर अनऑथराईज्ड कालोनियों में खासतौर से पूर्वांचल के लोग आकर के अपनी रोजी-रोटी कमाते हुए अपनी जिंदगी की एक एक पाई जोड़ करके लोगों ने अपने घरों को बसाया था अध्यक्ष महोदय, जब हमारी सरकार बनी थी उन कॉलोनियों में जाने के लिये लोग अपने रिश्तेदारों को पता नहीं बताते थे, कहते थे कनॉट प्लेस में आकर मिल लेना, क्यों अध्यक्ष महोदय, क्योंकि रहते तो वो दिल्ली में, गांव में कहते हैं कहां रहते हो, देश की राजधानी दिल्ली में लेकिन जब आकर के नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से रिश्तेदार उतरा तो कॉलोनी में जाने के लिये रस्ता ही नहीं, इतना-इतना जो है लंबा-लंबा गड्ढा, चारों तरफ पानी फैला हुआ, अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के आज अनऑथराईज कॉलोनियों को कायाकल्प किया है उसका नाम अरविंद केजरीवाल की सरकार है। करोड़ों रुपये के बजट लगाकर के आज शान के साथ जैसे मोती बाग में रहने वाला कोई व्यक्ति अपने दोस्त को अपना एड्रेस देता है आज उसी तरह से अनऑथराईज कालोनियों में रहने वाला व्यक्ति मान सम्मान के साथ अपने रिश्तेदारों को एड्रेस देता है। अब उसके बेटे बेटी को देखने के लिये लोग होटल में जगह नहीं बुक करते अध्यक्ष महोदय। शान के साथ अपनी कॉलोनी में बुलाते हैं, शान के साथ अपने

मान सम्मान के साथ अपने मोहल्ले वालों को इकट्ठा करते हैं और वहां पर वर वधु का रिश्ता तय होता है। अध्यक्ष महोदय, ये गौरव, ये आत्मसम्मान अगर आजादी के बाद इस दिल्ली के अंदर अनऑथोराइज पूर्वांचल के लोगों को अगर किसी ने दिया है उसका नाम अरविंद केजरीवाल है इतिहास में लिखा जायेगा। अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के अंदर देहात है, गांव का इलाका है। इस बार बजट में मैं खासतौर से मुख्यमंत्री जी का और वितमंत्री जी का धन्यवाद करना चाहता हूं। आजादी के बाद से दिल्ली के अंदर गांवों के विकास के लिये कभी 200 करोड़ का बजट रखा जाता था, कभी 300 का बजट रखा जाता था। अध्यक्ष महोदय, कोरोना काल से पहले मुख्यमंत्री जी ने 600 करोड़ का बजट रखा था, कोरोना काल आया 2 साल उसका विकास की गति रूक गयी। अध्यक्ष महोदय, मैं इस बात के लिये बधाई देना चाहता हूं दिल्ली के अब तक के इतिहास में सभी सरकारों के इतिहास में पहली बार इस बार बजट में 900 करोड़ रूपया दिल्ली के गांवों के विकास के लिये इस सरकार ने प्रावधान किया है। अध्यक्ष महोदय, ये ऐतिहासिक काम पहली बार हुआ है। अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के अंदर न सिर्फ गांव के लिये ये ऐतिहासिक फैसला की चर्चा तो आज सब जगह हो रही है। किसी भी परिवार की रीढ़ की हड्डी महिलायें होती हैं। पुरूषों को पैदा करने वाली मां, लेकिन हर परिवार में आधे पेट खाकर के सो जाती हैं। अपने अरमानों को कुचल देती है, दबा देती है। जब वो बेटी होती है तो बड़े होने पे बाप के सामने हाथ फैलाने में शर्म आती है, जब उसकी शादी हो जाती है तो पति के सामने हाथ फैलाने में छोटे

छोटे काम के लिये उसे शर्म महसूस होती है। अध्यक्ष महोदय, भाई के सामने हाथ फैलाने में शर्म महसूस होती है। अध्यक्ष महोदय, आज जो एक फैसला किया था अरविंद केजरीवाल जी की सरकार ने महिलाओं को दिल्ली के अंदर कहीं भी आने-जाने के मुफ्त यात्रा का उसमें आज 4 चांद लगा है, एक नया गौरव पैदा हुआ है। अगर माँ को गौरव बढ़ेगा, बहन का गौरव बढ़ेगा, पत्नी का गौरव बढ़ेगा यकीन मानिए उस परिवार में जो पैदा होगा बच्चा वो एक नये सोच के साथ, एक नए विकास के साथ पैदा होगा। ये जो इतिहास हमारी सरकार ने रचा है अध्यक्ष महोदय मुझे लगता है खुशहाल दिल्ली बनाने का जो रास्ता जो शुरू हुआ था कारवां इस बजट के साथ और आगे बढ़ेगा। बहुत-बहुत शुक्रिया। बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः अब माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल जी।

माननीय मुख्यमंत्री (श्री अरविंद केजरीवाल): अध्यक्ष महोदय।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैंने बोला है। मैंने बोला मोहन सिंह बिष्ट जी को समय दिया है। मैंने कोई बात नहीं आप जाइये। मैंने मोहन सिंह बिष्ट जी को 5 मिनट सदन, आपकी इच्छा है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैंने आपके द्वारा प्रस्तावित एलओपी को बोलने का अवसर दिया। एलओपी का अवसर दिया है। चलिए ठीक है। आप बैठ जाइये।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अभय जी, अभय जी मैं हाथ जोड़ के प्रार्थना कर रहा हूँ मोहन सिंह बिष्ट जी का मैंने नाम बोला। मैंने बोल दिया। ना कोई बात नहीं, छोड़ दीजिए। आपको बैठना है बैठिए, नहीं बाहर जाइये। नहीं बाहर जाइये प्लीज। मैं मोहन सिंह बिष्ट जी को। मैं इस मामले में जो बोल चुका हूँ। मैं प्रार्थना कर रहा हूँ शांति से, अब मैं समय नहीं दूंगा। माननीय मुख्यमंत्री जी बोल रहे हैं। अब मैं कोई समय नहीं। आप बाहर जाना चाहते हैं जाइये। अभय वर्मा जी एलओपी किसने डिक्लेयर किया। मोहन सिंह बिष्ट को एलओपी किसने डिक्लेयर किया। किसने एलओपी डिक्लेयर किया। विजेन्द्र गुप्ता जी ने एलओपी डिक्लेयर। एलओपी डिक्लेयर किसने किया, पहले डिसाइड करके आइये एलओपी कौन है। एलओपी विजेन्द्र गुप्ता जी ने डिक्लेयर किया। इसी सदन में डिक्लेयर किया। अब आप जाइये अब प्लीज। आप एक निर्णय करिये एलओपी कौन है आपका। एलओपी का नाम विजेन्द्र गुप्ता जी ने डिक्लेयर किया सदन पटल पर। पूरे सदन पटल पर डिक्लेयर किया। जाइये, भई आप माननीय सदस्यों से प्रार्थना है बैठ जायें। वो मैं हैंडल करूंगा। चलिए। आप देख लीजिए। भाई साहब, अभय वर्मा जी चलिए अब जो मैंने हाथ जोड ़कर बोल रहा हूँ, मैंने आपके एलओपी को समय दिया, आप नहीं बोल रहे हो। हाँ ठीक है, जाइये। मैं हाथ जोड़

रहा हूँ एलओपी को मैंने समय दिया, वो नहीं बोले। उन्होंने कहा मैं तैयारी करके नहीं आया हूँ। आप सदन से वॉकआउट कर चुके थे। चलिए। एलओपी नाम देता है। एलओपी नाम देता है। विजेन्द्र गुप्ता जी ने डिक्लेयर किया एलओपी। अभी विजेन्द्र जी ने इसी सदन में डिक्लेयर। चलिए बाहर जाइये अब। बाहर जाइये। मैं दोनों माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूँ, बाहर जाइये प्लीज।

(विपक्ष के सभी सदस्य सदन से बाहर चले गए)

माननीय मुख्यमंत्री (श्री अरविंद केजरीवाल): अध्यक्ष महोदय, आज जब हम बजट के ऊपर चर्चा कर रहे हैं तो हमें अपने छोटे भाई मनीष सिसोदिया जी की याद आ रही है। आज ये दसवां बजट है हमारी सरकार का। इसके पहले के नौ बजट मनीष सिसोदिया जी ने इस असेंबली में पेश किये थे और मैं उम्मीद करता हूँ कि अगले साल का बजट भी मनीष सिसोदिया जी ही इस असेंबली में पेश करेंगे। आज ये पूरा हाउस उन्हें याद कर रहा है। उनकी अनुपस्थिति में आतिशी जी ने बतौर फाइनेंस मिनिस्टर आज का ये बजट असेंबली के अंदर रखा है और मैं उन्हें बधाई देता हूँ कि ये बजट बहुत अच्छा है और इसमें समाज के सभी तबको का और सभी सेक्टर्स का ख्याल रखा गया है। चाहे वो शिक्षा हो, स्वास्थ्य हो, बिजली हो, पानी हो, सड़क हो, नाली हो, ड्रेनेज हो सबका इसमें ख्याल रखा गया। चाहे वो अमीर हो, गरीब हो इस जाति का हो, उस जाति का हो, युवा हो, बुजुर्ग हो, हर एक का इस बजट के अंदर ख्याल रखा गया है। तो मैं आतिशी जी को भी ये बजट प्रस्तुत करने के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। अध्यक्ष

महोदय, 2014-15 में इस देश में 2 घटनायें घटीं। मई 2014 में देश के लोगों ने केंद्र में मोदी जी को भारी बहुमत देकर, बीजेपी को भारी बहुमत देकर 282 सीट आई थीं शायद पहली बार इनकी 2014 में। 282 सीट देकर, भारी बहुमत देकर केंद्र के अंदर उनकी सरकार बनाई और उसी वर्ष के अंत में फरवरी 2015 में एक आधे राज्य दिल्ली के अंदर दिल्ली की जनता ने 70 में से 67 सीट देकर भारी बहुमत से दिल्ली में आम आदमी पार्टी की, एक नई पार्टी की सरकार बनाई। तो एक केंद्र के अंदर सरकार बनी और एक दिल्ली के अंदर सरकार बनी। दोनों भारी बहुमत से सरकार बनी और जब जनता भारी बहुमत से सरकार बनाती है तो जाहिर तौर पर जनता को बहुत उम्मीदें होती हैं उन सरकारों से। इन दोनों सरकारों ने पिछले 10 साल के अंदर 2 किस्म के देश के सामने गवर्नेंस के मॉडल रखें हैं और ये दोनों गवर्नेंस के मॉडल ऐसे हैं जो आपको चुनाव जीताने की गारंटी लेते हैं। उनका भी चुनाव जिताता है, इनका भी चुनाव जिताता है। एक गवर्नेंस का मॉडल है विकास का मॉडल और एक गवर्नेंस का मॉडल है विनाश का मॉडल। हमने आम आदमी पार्टी ने 2015 फरवरी में जो भारी बहुमत मिला, हमारे पास तो कोई पावर ही नहीं थी दिल्ली के अंदर ना पुलिस हमारे पास, ना एलजी हमारे पास, कोई पावर ही नहीं हमारे पास। लेकिन हमने धीरे-धीरे करके लड़-लड़ के हाथ जोड़कर, पैर पकड़ कर स्कूल ठीक कर दिये, अस्पताल ठीक कर दिये, लोगों के बच्चों को भविष्य दिया। गरीब के बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर बनने का सपना दिया। उनके सपनों को पूरा किया। किसी के घर में कोई बीमार हो

जाए उसका अच्छे से अच्छे इलाज का इंतजाम किया। बिजली 24 घंटे की। बिजली मुफ्त कर दी, पानी मुफ्त कर दिया। तीर्थयात्रा करवा रहे हैं बुजुर्गों को। इतने सारे काम किये जनता बड़ी खुश हो गई। जनता का दिल जीतने का काम किया। ये एक मॉडल था जो आम आदमी पार्टी ने विकास का मॉडल दिया और उसके बाद हम लगातार एमसीडी के चुनाव हुए, उसके बाद हम 2020 में चुनाव हुए। लगातार सारे चुनाव भारी बहुमत से जीतते जा रहे हैं और ये अभी जो बजट रखा गया अब तो जनता कह रही है कि ये सातों सीट भी हमारी आयेंगी इस बार। ये था विकास का मॉडल। 2014 मई में जो बीजेपी को भारी बहुमत मिला और 280 सीट आईं, उन्होंने एक दूसरा गवर्नेंस का मॉडल रखा जो है विनाश का मॉडल। उस विनाश के मॉडल के दो हिस्से हैं। एक हिस्सा है सामने सारी पार्टियों को कुचल दो, खत्म कर दो, खरीद लो, तोड़ दो, गिरफ्तार कर लो, जेल भेज दो, ईडी लगा दो, सीबीआई लगा दो सामने कोई बचेगा ही नहीं तो चुनाव किसके बीच में होंगे। फिर तो ये ही हैं। ये दूसरा मॉडल है जिसके अंदर आप विपक्ष को एक-एक करके खत्म करते जाते हो। सरकारें गिरा देते हो, एमएलए तोड़ लेते हो, गिरफ्तार कर लेते हो, धमकी देते हो और इनके विनाश मॉडल का दूसरा हिस्सा है कि पूरे देश में कहीं कोई विपक्ष की सरकार अच्छा काम कर रही हो उनके कामों को रोको। खुद अच्छा काम नहीं करो। उनको अच्छा काम करने से रोको। अगर कोई देश हित में इस देश में दूसरी सरकार कोई काम कर रही है तो उसको अच्छा काम करने से रोको। ऐसा नहीं कि इनको देश ने मौका नहीं दिया अच्छा काम करने

का। गुजरात में 30 साल से इनकी सरकार है। 30 साल में एक स्कूल ठीक नहीं किया इन्होंने। एक सरकारी स्कूल ठीक नहीं किया। अभी जो गुजरात के अंदर विधान सभा के चुनाव हुए उसमें एक दिन प्रधानमंत्री जी का मन किया कि मैं ये मनीष सिसोदिया रोज जा-जा के स्कूलों में फोटो खिंचवाता है डैस्क पर बैठ-बैठ के तो एक दिन प्रधानमंत्री जी का मन किया मैं भी जाकर डैस्क पर बैठ कर फोटो खिचाऊं। तो उन्होंने तय किया कि मैं गुजरात के किसी सरकार स्कूल में जाकर डैस्क पर बैठकर बच्चों के बीच में फोटो खिचवाऊंगा। पूरे गुजरात में ढूंढा इन्होंने 30 साल में एक स्कूल ऐसा नहीं मिला पूरे गुजरात में जहां प्रधानमंत्री जी जाकर इज्जत के साथ फोटो खिचवा सकते। तो उन्होंने टैंट में, एक टैंट लगाया गया और टैंट के अंदर 5 बच्चे बिठाये गए, 4 डैस्क बिठाये गए, एक फर्जी टीचर सामने और वहां प्रधानमंत्री जी को फोटो खिंचवाई। अगले दिन जब हमारे कार्यकर्ता वहां पहुंचे वो टैंट भी नहीं था और क्लासरूम भी नहीं था और स्कूल भी नहीं, टीचर भी नहीं था, बच्चे भी नहीं थे। तो ऐसा नहीं कि देश ने इनको, देश ने इतना भारी बहुमत दिया ये चाहते तो देश का दिल जीत सकते थे। अगर ये कुछ काम कर लेते तो आज इनको ईडी की जरूरत नहीं पड़ती, सीबीआई की जरूरत नहीं पड़ती, पुलिस की जरूरत नहीं पड़ती, इनकम टैक्स की जरूरत नहीं पड़ती। जनता वैसे ही कहती यार इनको जैसे दिल्ली में कहती है। दिल्ली में तो हमारे पास पावर ही नहीं है। हमने कौन-सी ईडी, वीडी छोड़ रखी है इनके पीछे। खूब फल-फूल रहे हैं ये लोग भी। सारा विपक्ष फल-फूल रहा है, लेकिन दिल्ली की

जनता के दिल में तो हम लोग हैं ना। इन्होंने ईडी का और पैसा, आज इनके पास पैसे की कोई कमी नहीं है। पता नहीं कितना पैसा कमा रखा है। अब जब सूप्रीम कोर्ट ने कहा इलैक्ट्रोरल बॉन्ड किस–किस ने, तो बता ही नहीं रहे कितने बॉन्ड किसको किस पार्टी ने दिये और ये तो एक नंबर का पैसा जो इलैक्ट्रोरल बॉन्ड से दो नंबर का पता नहीं कितना पैसा। एक–एक एमएलए 25 करोड़, 50 करोड़, 100–100 करोड़ में एमएलए खरीद रहे हैं पूरे देश के अंदर जाकर। इन्होंने उत्तराखंड की सरकार गिरा दी। उत्तराखंड में लोगों ने कांग्रेस की सरकार बनाई, हरीश रावत की सरकार बनाई एमएलए खरीद के, एमएलए तोड़ के इन्होंने उत्तराखंड की सरकार गिरा दी। इन्होंने कर्नाटक की सरकार गिरा दी, इन्होंने मध्य प्रदेश की सरकार गिरा दी, इन्होंने गोवा की सरकार गिरा दी, इन्होंने अरूणाचल प्रदेश की सरकार गिरा दी। अब हिमाचल प्रदेश की सरकार गिराने जा रहे हैं थोड़े दिन के अंदर और फिर कहते हैं हम जीतते हैं। ये जीतते थोडे ह़ी हैं, सरकार गिराते हैं। ये जीतना थोड़े ही है। ऐसे बनाओगे सरकारें तुम। इन्होंने एक–एक करके पार्टियां तोड़ दीं। महाराष्ट्र के अंदर लोगों ने महाविकास अगाड़ी की सरकार बनाई है। एमवीए की सरकार बनाई, शिव सेना, एनसीपी और कांग्रेस की सरकार बनाई। अच्छी सरकार चल रही थी। अच्छा काम कर रहे थे वो लोग। ईडी का इस्तेमाल करके, सीबीआई का इस्तेमाल करके शिव सेना के 2 टुकड़े कर दिये। सारे एमएलए इन्होंने तोड़ दिये। ईडी का इस्तेमाल करके, सीबीआई का इस्तेमाल करके इन्होंने एनसीपी के एमएलए तोड़ दिये, वहां की सरकार गिरा दी इन लोगों ने। इनका फॉर्मूला है कि

सामने विपक्ष को रखो ही मत। कोई विपक्ष में ही नहीं रहेगा तो फिर चुनाव किस बात के होंगे। फिर तो इन्हीं को वोट पड़ेंगे। सबको जेल में डाल दो, कोई सामने ही नहीं रहेगा। कहते हैं मोदी नहीं तो कौन, क्यों कहते हैं? सबको तो जेल में डाल दिया तो मोदी नहीं तो कौन। कोई बचा ही नहीं। सारे जेल में डाल दिये तो मोदी नहीं तो कौन। मोदी नहीं तो सारे जेल में। तो ये इनका बड़ा सही फॉर्मूला है। अब ये एक और उसपर आये हैं। ये कह रहे हैं हम तो 370 जीत रहे हैं, 370 जीत रहे हैं। ये नया अब है अगले 5 साल में ये चलेगा। ये ये कहने की कोशिश कर रहे हैं कि अब हमें इस देश के 140 करोड़ लोगों की जरूरत नहीं है। अब तुम्हारे वोट की जरूरत नहीं है। घर बैठो। वोट डालने आओ तो डालना, नहीं डालने आओ तो मत डालना हमें तो 370 मिल रहे हैं, क्योंकि सामने लड़ने वाला ही कोई नहीं बचा। थोड़े दिन के अंदर सारा विपक्ष, हिटलर ने भी ये ही किया था जब हिटलर आया था। हिटलर ने तीन महीने में कर दिया इन्होंने 10 साल लगा दिये। तो अब इनका ये कहना है कि हमें किसी की जरूरत नहीं है। तो ये जनतंत्र खत्म कर रहे हैं। अध्यक्ष महोदय ये देश के साथ गद्दारी है। ये देशद्रोह है अगर इस देश के अंदर जनतंत्र खत्म कर दिया जाए। मैं मन में सोच रहा था आज अगर श्री राम होते, अगर श्री राम चन्द्र जी आज इस युग के अंदर होते तो ईडी और सीबीआई को उनके घर भी भेज देते और यहां बन्दूक रख के पूछते बता बीजेपी में आ रहा है कि जेल जायेगा और अब ये आम आदमी पार्टी को तोड़ने में लगे हुए हैं। आम आदमी पार्टी को क्रश करना चाहते हैं क्योंकि आम आदमी

पार्टी भविष्य में इनको चैलेंज कर सकती है, देश के अंदर चैलेंज कर सकती है, अलग-अलग राज्यों के अंदर चैलेंज कर सकती है। सबसे तेजी से बढ़ने वाली पार्टी है और इनके काबू नहीं आ रहे आम आदमी पार्टी वाले। इन्होंने मनीष सिसोदिया जी को जेल में डाल दिया। इन्होंने सत्येन्द्र जैन जी को जेल में डाल दिया। इन्होंने संजय सिंह को जेल में डाल दिया। अब ये मुझे जेल में डालने की तैयारी कर रहे हैं। पूरा चाह रहे हैं केजरीवाल को जेल में डालेंगे, प्लानिंग कर रखी है। मैं बीजेपी वालों से बात कर रहा था। बीजेपी में कई दोस्त हैं। अच्छे लोग भी हैं बीजेपी में, सारे खराब नहीं हैं। तो बीजेपी वालों से बात कर रहा था वो बोले जी पूरी प्लानिंग है। आपको जेल में डालेंगे, आपकी सरकार गिरायेंगे। सरकार गिराने के बाद सबसे पहला काम करेंगे ये जो बिजली फ्री कर रखी है ना इसको बंद करेंगे दिल्ली के अंदर। मैंने कहा क्यों ऐसा क्यों करोगे। बोले पूरे देश में तकलीफ हो रही है। किसी भी बीजेपी के राज्य में बिजली मुफ्त नहीं है। आपने दिल्ली में कर दी है, पंजाब में कर दी। जहां जाओगे आप बिजली मुफ्त का दावा करते हो। हम तो नहीं कर सकते। हम तो पैसे खाते हैं, इतना बजट कहां से आयेगा। भई पैसे भी खा लें और बिजली भी मुफ्त कर दें दोनों तो नहीं हो सकते। तो बिजली मुफ्त को सबसे पहले बिजली मुफ्त खत्म करेंगे। फिर ये तुम्हारे स्कूल खराब करेंगे। ये जो तुमने स्कूल बनवाये बोला हमसे तो होते नहीं हैं। दूसरे बीजेपी ना गुजरात में कर सके, ना मध्य प्रदेश में कर सके, ना राजस्थान में, हमसे तो होते नहीं हैं। फिर स्कूल खराब करेंगे। फिर मोहल्ला क्लीनिक बंद करेंगे और फिर

अस्पताल बंद करेंगे। ये पूरी प्लानिंग कर रखी है बीजेपी वालों ने केजरीवाल को गिरफ्तार करेंगे और उसके बाद दिल्ली को बर्बाद करेंगे। मेरे को इतने नोटिस भेज दिये, इतने नोटिस भेज दिये सारी एजेंसी जैसे देश का सबसे बड़ा आतंकवादी केजरीवाल है। मैं मन में सोचता हूँ यार दो-चार आतंकवादियों को भी नोटिस भेज लो। सारे नोटिस 8 समन आ गए मेरे पास ईडी के, आठ समन अब बता रहे हैं नौवां भी आने वाला है रास्ते में है। तो मैं इनको कहना चाहता हूँ तुम जितने समन भेजोगे मैं उतने स्कूल बनवाऊंगा। आज मैं इस सदन के अंदर घोषणा करना चाहता हूँ कि आठ समन आये हैं, आठ नए स्कूल दिल्ली के अंदर बनाये जायेंगे और अध्यक्ष महोदय एक बीजेपी वाले ने बड़ा सही बोला है।

"केजरीवाल से नफरत करनी है तो संभल के करना ए दोस्त,
केजरीवाल से नफरत करनी है तो संभल के करना ए दोस्त,
अगर उसके स्कूल और अस्पताल देख लिये
तो मोहब्बत हो जायेगी केजरीवाल से।"

अध्यक्ष महोदय अमेरिका में एक यूनिवर्सिटी है कोलम्बिया यूनिवर्सिटी, दुनिया की सबसे अच्छी यूनिवर्सिटीज में से एक है। कोलंबिया यूनिवर्सिटी में अगर आप जायें तो कोलंबिया यूनिवर्सिटी के एंट्रेंस के ऊपर आपको एक बहुत बड़ा बुत एक महापुरूष का मिलता है। पूरी दुनिया के अंदर कोलंबिया यूनिवर्सिटी को एक ही महापुरूष मिला कौन है, बाबा साहब अंबेडकर का बुत। बाबा साहब अंबेडकर 1915 में 13 या 15 के

आसपास, कोलंबिया यूनिवर्सिटी 1913 में कोलंबिया यूनिवर्सिटी पढ़ने के लिए गए थे। तो कोलंबिया यूनिवर्सिटी का कहना था कि अभी तक जितने सौ सवा सौ साल की पुरानी यूनिवर्सिटी है जितने लोग पढ़ने के लिए आये उसमें सबसे बेस्ट स्टूडेंट हमारा बाबा साहब अंबेडकर थे। ये ये दिखाता है कि इंटेलीजेंस जो है वो पैसे की मोहताज नहीं है। बाबा साहब अंबेडकर बहुत गरीब थे। पैसे की मोहताज नहीं है इंटेलीजेंस। ये ये दिखाता है कि इंटेलीजेंस जो है वो किसी जाति का मोनोपली नहीं है। किसी भी जाति के अंदर इंटेलीजेंट लोग हो सकते हैं। तो हमें गर्व है बाबा साहब अंबेडकर के ऊपर जिनका बुत, आज कोई बता रहा था लंदन स्कूल ऑफ एक्सचेंज के बाहर भी शायद उन्होंने लगाया। वहां भी लगाया उन्होंने बुत उनका। बाबा साहब अंबेडकर का सपना था कि इस देश के हर बच्चे को चाहे वो गरीब हो, चाहे अमीर हो, चाहे वो इस जात का हो, चाहे उस जात को हो, हर एक को अच्छी शिक्षा मिलनी चाहिए। आज उनका ये सपना मुझे बेहद खुशी है, हमारे आईडल हैं बाबा साहब अंबेडकर उनकी फोटो हम अपने घरों में भी लगाते हैं, ऑफिसों में भी लगाते हैं। आज उनका सपना हम पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं और बाबा साहब अंबेडकर और भगवान हमें आशीर्वाद दें कि उनका सपना हम पूरा करें। लेकिन जो काम भी आज हम दिल्ली के अंदर करने की कोशिश करते हैं वो बीजेपी वाले जैसा मैंने कहा इनका विनाश का मॉडल है, ये बीजेपी वाले हर काम को रोकने की कोशिश करते हैं। लेकिन मैंने दिल्ली वालों का कोई काम रूकने नहीं दिया। देरी जरूर कर दी इन्होंने। जैसे मैं आपको उदाहरण

देता हूँ दिल्ली के अंदर आज 10 साल के बाद भी लगभग 9 साल के बाद भी हम 530 मोहल्ला क्लीनिक बना पाये। पंजाब में हमारी सरकार बनी है, फुल गवर्मेंट है दो साल के अंदर हमने 830 मोहल्ला क्लीनिक बना दिये क्योंकि वहां रोकने वाला कोई नहीं है। यहां इतना लड़ना पड़ा मेरे को इतना जब शुरू-शुरू में हमने मोहल्ला क्लीनिक बनाये। पहले तो एलजी साहब ने 2 साल तक फाइल नहीं पास की। 2 साल एलजी साहब मेरे को पता है ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे फाइलें बताओ इनके पिताजी का क्या जाता था अगर दिल्ली के लोगों को अच्छा इलाज मिल जाता तो? इनको क्या तकलीफ हो रही थी जो इन्होंने मोहल्ला क्लीनिक नहीं बनने दिया? इनको एक ही तकलीफ थी केजरीवाल ने अच्छा काम कर दिया तो हमें वोट नहीं मिलेंगे। तो ये विनाश का मॉडल है। अच्छा काम नहीं करने देना। विपक्ष के लोगों को अच्छा काम नहीं करने देना। हमने मोहल्ला क्लीनिक बनाये दिल्ली के अंदर सड़कों के ऊपर उस टाइम एमसीडी में इनकी सरकार थी। बुलडोजर भेज कर इन्होंने दिल्ली सरकार के मोहल्ला क्लीनिक, बुलडोजर भेजकर तुड़वा दिये। दिल्ली सरकार के मोहल्ला क्लीनिक, अरे भई कोई इल्लीगल इनक्रोचमेंट हो, क्या दिल्ली सरकार के मोहल्ला क्लीनिक को इल्लीगल इनक्रोचमेंट माना जा सकता है? दिल्ली सरकार के मोहल्ला क्लीनिक को इन्होंने एमसीडी से बुलडोजर भेजकर तुड़वा दिये। लेकिन मैं भी रुकने वाला नहीं था दिल्ली वालों का बेटा हूं। हम रुके नहीं, हमारे 530 मोहल्ला क्लीनिक आज दिल्ली के कोने-कोने में काम कर रहे हैं और अभी और बन रहे हैं। इन्होंने दिल्ली के अंदर हम सीसीटीवी कैमरे

लगाना चाहते थे, इन्होंने सीसीटीवी कैमरे रुकवा दिये इन लोगों ने। एलजी साहब ने 2 साल तक फाइलें ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे 2 साल, जब नहीं साइन की एलजी साहब ने फाइल, तो मैं, गोपाल राय, सत्येन्द्र जैन और मनीष सिसोदिया एलजी के घर के अंदर घुसकर हमने धरना दिया और फाइल साइन कराकर लाए एलजी से। काम रुकने नहीं दिया लेकिन दो साल पहले हो जाता वो काम जो दो साल एलजी साहब ने लगा दिये, दो साल पहले हो जाता वो काम। घर-घर राशन स्कीम हम करना चाहते थे, इन्होंने वो राशन की स्कीम पास नहीं करने दी। अभी पिछले हफ्ते पंजाब जाकर मैं घर-घर राशन की स्कीम लागू करके आ रहा हूं। पंजाब में लागू हो गई, पंजाब में लोगों को राशन मिलने लग गया मुझे पूरी उम्मीद है दिल्ली के लोगों के लिए भी एक दिन मैं करके दिखाऊंगा। पिछले साल, इतने घटिया लोग हैं ये लोग इन्होंने दो महीने के लिए मेरे दिल्ली वालों को इतना सताया, इतना सताया दो महीने के लिए इन्होंने दिल्ली के अस्पतालों के अंदर दवाइयां बंद कर दी, दिल्ली के अस्पतालों में खिड़की पर बैठने वाले जो ऑपरेटर होते थे जो रजिस्ट्रेशन करते थे लाइन लगती है, एक मरीज आता है वो रजिस्ट्रेशन कराता,वहां बैठने वाले कर्मचारियों की तनख्वाह रोक दी इन लोगों ने, पाप चढ़ेगा इन लोगों को। इनको लगता है ये खुदा हो गये लेकिन खुदा तो कोई और है, खुदा तो ऊपर है, भगवान तो ऊपर है, भगवान देख रहा है इनको पाप चढ़ेगा इन लोगों को। हमारे हिन्दू धर्म में कहते हैं कि अगला जन्म भी होता है, ये आत्मा जो है दूसरा शरीर भी धारण करती है अगले जन्म में इनका क्या हाल होगा

मैं सोच-सोचकर, जिस तरह से ये दवाइयां रोक रहे हैं, टैस्ट रोक दिये, इन्होंने मोहल्ला क्लीनिक के सारे टैस्ट बंद कर दिये इन लोगों ने। मोहल्ला क्लीनिक की बिजली काट दी इन लोगों ने, मोहल्ला क्लीनिक का किराया बंद कर दिया इन लोगों ने। दो-तीन महीने तो मेरे दिल्ली वालों को तकलीफ हुई लेकिन मैं भी नहीं रुका, मैंने सारा दोबारा चालू करा दिया, दिल्ली वालों का सारा दोबारा चालू करा दिया। अध्यक्ष महोदय, एक गौतम बुद्ध के जीवन से एक कहानी सुनते हैं सिद्धार्थ गौतम उनका नाम होता था जब छोटे बच्चे थे। एक दिन सिद्धार्थ गौतम, वो एक राजा के बेटे थे सिद्धार्थ गौतम एक दिन जब बगीचे में घूम रहे थे अचानक उनके सामने एक हंस आकर गिरा, उस हंस को तीर लगा हुआ था, किसी ने तीर मारा हुआ था। वो तीर लगा और वो पक्षी जो है वो उनके सामने आकर गिरा। सिद्धार्थ गौतम ने जाकर उस पक्षी को उठाया, तीर निकाला, मरहम पट्टी की और उसकी जान बचाई। इतने में सिद्धार्थ गौतम का चचेरा भाई देवदत्त सामने से दौड़ा-दौड़ा आया और देवदत्त आकर सिद्धार्थ गौतम को बोलता है कि ये पक्षी मेरा है, इसको तीर चलाकर मैंने गिराया है, ये पक्षी मुझे दो। सिद्धार्थ गौतम कहता है कि ये पक्षी मेरा है क्योंकि इसकी जान मैंने बचाई है। तो वो कह रहा है कि ये पक्षी मेरा है इसको मैंने मारा है, ये कह रहा है ये पक्षी मेरा है इसे मैंने बचाया है। तो दोनों भाई लड़ते-लड़ते राजा के दरबार में जाते हैं, राजा के सामने पूरी कहानी सुनाते हैं और राजा बोलता है कि दोनों भाई अलग-अलग खड़े हो जाओ पक्षी को बीच में रख दिया जाता है ताकि पक्षी तय करेगा कि मैं किसके साथ जाउंगा

और पक्षी धीरे-धीरे-धीरे चलते-चलते सिद्धार्थ गौतम के पास आ जाता है। ये बचपन से सुनते आ रहे हैं कहानी इसमें बताया जाता है कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है। आज दिल्ली के अंदर आम आदमी पार्टी सिद्धार्थ गौतम है, देवदत्त वो बीजेपी है और ये हंस दिल्ली की जनता है। बीजेपी रोज तीर चला रही है दिल्ली की जनता के सीने के अंदर। बीजेपी रोज मार रही है दिल्ली की जनता को, आम आदमी पार्टी रोज बचा रही है दिल्ली की जनता को, मरहम कर रही है, पट्टी कर रही है, उसके जख्म दूर कर रही है और जाहिर तौर पर पूरी की पूरी जनता आम आदमी पार्टी की तरफ आ रही है। अध्यक्ष महोदय, मैं दिल्ली वालों से बेहद प्यार करता हूं और दिल्ली के लोग मुझसे बेहद प्यार करते हैं। मैं हमेशा कहता हूं कि मैं एक बहुत छोटा आदमी था और मेरे जैसे आदमी को दिल्ली के लोगों ने इतने प्यार और विश्वास से इतनी बड़ी पोजीशन पर बिठा दिया, इतनी बड़ी जिम्मेदारी दे दी। आज अगर दिल्ली के किसी भी परिवार में कोई तकलीफ होती है यहां पर दर्द होता है। मेरी पूरी कोशिश होती है कि दिल्ली के लोगों की तकलीफों को मैं दूर कर सकूं। मुझे नहीं पता ये रिश्ता क्या कहलाता है, मेरे और दिल्ली के लोगों के बीच का ये रिश्ता क्या कहलाता है। कुछ लोग कहते हैं पुराने जन्मों का कुछ है मेरे और दिल्ली के बीच का रिश्ता जो है ये कुछ न कुछ तो पुराने जन्मों का कुछ है जो आज इस जन्म के अंदर मेरे को अचानक इतना बड़ा पद दिल्ली के लोगों ने इतना विश्वास और इतना प्यार दे दिया। मैं दिल्ली के लोगों को कहना चाहता हूं कि हमें दिल्ली के दुश्मनों को पहचानना पड़ेगा कि दिल्ली के

दुश्मन कौन हैं, जो लोग दिल्ली के लोगों की दवाइयां रोक रहे हैं वो दिल्ली के दुश्मन हैं। जो दिल्ली के बच्चों के स्कूल रोक रहे हैं वो दिल्ली के दुश्मन हैं। जो दिल्ली के मोहल्ला क्लीनिक बनने से रोक रहे हैं वो दिल्ली के दुश्मन हैं। जो दिल्ली के लोगों की बिजली सब्सिडी और बिजली रोक रहे हैं वो दिल्ली के दुश्मन हैं। आज दिल्ली के ढ़ाई करोड़ लोगों को मिलकर इन दुश्मनों को सजा देनी पड़ेगी, इन दुश्मनों को दिल्ली से निकालना पड़ेगा और परमानेंटली निकालना पड़ेगा, अब बहुत हो गया इन लोगों का। मुझे बेहद खुशी है कि इस बजट के अंदर महिलाओं के लिए हर 18 साल से ऊपर की महिला के लिए हजार-हजार रुपये का ऐलान किया गया है। मैं कई सारे वीडियो देख रहा था सोशल मीडिया के ऊपर कुछ लोगों की क्वेश्चंस हैं जिसको मैं दूर करना चाहता हूं। एक तो हर परिवार में जितनी भी महिलाएं हैं जो इसमें पात्र हैं इसमें ऐसा नहीं है कि एक परिवार से एक महिला को मिलेगा, अगर किसी परिवार में मां है, बहू है, बेटी है और तीनों एलिजिबल हैं तो तीनों को हजार-हजार रुपये अलग-अलग दिये जाएंगे। तो एक तरह से उन तीनों को मिलाकर साल में 36 हजार रुपये इस योजना के तहत उनको दिये जाएंगे और बीजेपी वाले इसका खूब विरोध कर रहे हैं, महिलाओं को पैसे देने की क्या जरूरत है, महिलाएं बिगड़ जाएंगी, महिलाएं जिम्मेदार नहीं होती हैं, महिलाएं ये महिलाएं वो, इतना ज्यादा महिलाओं के विरुद्ध ये बीजेपी वाले बोल रहे हैं मुझे नहीं पता इनको महिलाओं से इतनी क्यों तकलीफ है। तो मैं आपसे पूछ रहा हूं क्या आप समर्थन करते हैं, क्या आप समर्थन करते हैं, मैं आपसे पूछ रहा हूं क्या आप समर्थन, आपसे पूछना चाहता हूं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी (नेता प्रतिपक्ष): मैं स्पीकर साहब के माध्यम से आपसे गुजारिश कर रहा हूं।

माननीय मुख्य मत्री: क्या आप समर्थन करते हैं इस योजना का?

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी (नेता प्रतिपक्ष): आरोप लगाने का पूरा अधिकार है लेकिन एक स्टेटमेंट बता दीजिए हमने आपकी इस योजना का विरोध किया है, एक सिंगल।

माननीय अध्यक्षः बैठिये अब बिधूड़ी जी।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी (नेता प्रतिपक्ष): क्यों नहीं हैं भई, हैं ना।

माननीय मुख्य मत्री: मैं उन्हें ये कहना चाहता हूं कि हम इस देश के हर परिवार के बारे में सोचते हैं, लोगों की बिजली मुफ्त करते हैं, लोगों के घर में कोई बीमार हो जाए तो उसका इलाज कराते हैं, महिलाओं को हजार-हजार रुपये देते हैं। हम अपने अरबपति दोस्तों को पैसे नहीं दे रहे जैसे ये लोग अपने अरबपति दोस्तों के लिए काम करते हैं इसलिए इनको इतनी तकलीफ हो रही है। इनको तकलीफ इसलिए हो रही है कि अगर केजरीवाल ने महिलाओं को इतने पैसे दे दिये तो इनके अरबपति दोस्तों को पैसे, पैसे लूटने के लिए नहीं बचेंगे।

...व्यवधान...

माननीय मुख्य मत्री: अध्यक्ष महोदय, एक और बड़ी घटना घटी है कि पहले ये सारी पार्टियां मिलकर कहती थी मेनिफेस्टो लेकर आएंगे,

संकल्प पत्र लेकर आएंगे चुनाव के पहले। हम लोगों ने कहना चालू किया केजरीवाल की गारंटी, हमने कहना चालू किया केजरीवाल, आजकल ये भी गारंटियां दे रहे हैं। तो मैं कहना चाहता हूं,

"जब बजने लगी खतरे की घंटियां,
तो मोदी जी को याद आई केजरीवाल की गारंटियां।
जब बजने लगी खतरे की घंटियां
तो मोदी जी को याद आई केजरीवाल की गारंटियां।"

तो अध्यक्ष महोदय देश के सामने दो मॉडल हैं, एक विकास का मॉडल हैं, एक विनाश का मॉडल है दोनों मॉडल चुनाव जिताते हैं, देश की जनता को तय करना है कि उनको देश का विकास चाहिए कि देश का विनाश चाहिए लेकिन लोगों को अपनी आंखें खोलनी पड़ेंगी, लोगों को देखना पड़ेगा कि चल क्या रहा है इस देश के अंदर। मैं फिर से आतिशी जी को बहुत-बहुत बधाई देता हूं इस पूरे सदन को बधाई देता हूं इतना शानदार बजट दिल्ली की जनता के लिए प्रस्तुत किया गया बहुत-बहुत शुक्रिया।

माननीय अध्यक्षः अब सदन माननीय वित्त मंत्री द्वारा दिनांक 04 मार्च, 2024 को सदन में प्रस्तुत Demands foÙk Grants पर Demand wise विचार करेगाः-

DEMAND NO. 1 (Legislative Assembly)

जिसमें Revenue में 51 करोड़ 57 लाख रुपये तथा Capital में 27 करोड़ 35 लाख रुपये हैं, कुल राशि 78 करोड़ 92 लाख रुपये सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 1 पास हुई।

DEMAND NO. 2 (General Administration)

जिसमें Revenue में 6 अरब 9 करोड़ 36 लाख 30 हज़ार रुपये तथा Capital में 9 करोड़ 91 लाख 70 हज़ार रूपये, कुल राशि 6 अरब 19 करोड़ 28 लाख रुपये सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 2 पास हुई।

DEMAND NO. 3 (Administration of Justice)

जिसमें Revenue में 22 अरब 80 करोड़ 41 लाख 4 हज़ार रुपये हैं तथा Capital में 2 अरब 71 करोड़ 50 लाख 14 हज़ार रुपये हैं, कुल राशि 25 अरब 51 करोड़ 91 लाख 18 हज़ार रुपये सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 3 पास हुई।

DEMAND NO. 4 (Finance)

जिसमें Revenue में 3 अरब 31 करोड़ 90 लाख रुपये हैं तथा Capital में 78 करोड़ 25 लाख रूपये हैं, कुल राशि 4 अरब 10 करोड़ 15 लाख रुपये सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 4 पास हुई।

DEMAND NO. 5 (Home)

जिसमें Revenue में 11 अरब 41 लाख 55 हज़ार रुपये हैं तथा Capital में 1 अरब 40 करोड़ 63 लाख 65 हज़ार रूपये, कुल राशि 12 अरब 41 करोड़ 5 लाख 20 हज़ार रुपये सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 5 पास हुई।

DEMAND NO. 6 (Education)

जिसमें Revenue में 160 अरब 56 करोड़ 40 लाख 75 हज़ार रुपये हैं तथा Capital में 1 अरब 1 करोड़ 47 लाख 25 हज़ार, कुल राशि 161 अरब 57 करोड़ 88 लाख रुपये सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 6 पास हुई।

DEMAND NO. 7 (Medical & Public Health)

जिसमें Revenue में 76 अरब 30 करोड़ 88 लाख 31 हज़ार रुपये हैं तथा Capital में 2 अरब 57 करोड़ 28 लाख 54 हज़ार रूपये, कुल राशि 78 अरब 88 करोड़ 16 लाख 85 हज़ार रुपये सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 7 पास हुई।

DEMAND NO. 8 (Social Welfare)

जिसमें Revenue में 111 अरब 86 करोड़ 8 लाख 50 हज़ार रुपये हैं तथा Capital में 7 अरब 92 करोड़ 96 लाख 50 हज़ार रूपये, कुल राशि 119 अरब 79 करोड़ 5 लाख रुपये सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 8 पास हुई।

DEMAND NO. 9 (Industries)

जिसमें Revenue में 3 अरब 60 करोड़ 69 लाख 50 हज़ार रुपये हैं तथा Capital में 15 करोड़ 44 लाख 50 हज़ार रूपये, कुल राशि 3 अरब 76 करोड़ 14 लाख रुपये सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 9 पास हुई।

DEMAND NO. 10 (Development)

जिसमें Revenue में 39 अरब 16 करोड़ 87 लाख 25 हज़ार रुपये हैं तथा Capital में 10 अरब 33 करोड़ 18 लाख 69 हज़ार रूपये, कुल राशि 49 अरब 50 करोड़ 5 लाख 94 हज़ार रुपये सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 10 पास हुई।

DEMAND NO. 11 (Urban Development & Public Works)

जिसमें Revenue में 141 अरब 28 करोड़ 10 लाख रुपये हैं तथा Capital में 74 अरब 13 करोड़ 65 लाख 80 हज़ार रुपये, कुल राशि 215 अरब 41 करोड़ 75 लाख 80 हज़ार रुपये सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 11 पास हुई।

DEMAND NO. 12 (Loans)

जिसमें Capital में 1 करोड़ 30 लाख रूपये हैं सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 12 पास हुई।

DEMAND NO. 13 (Pensions)

जिसमें Revenue में 3 करोड़ रूपये हैं सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 13 पास हुई।

हाउस ने कुल मिलाकर Revenue में 576 अरब 55 करोड़ 70 लाख 20 हज़ार रुपये एवं Capital में 101 अरब 42 करोड़ 96 लाख 77 हज़ार रुपये, कुल राशि 677 अरब 98 करोड़ 66 लाख 97 हज़ार रुपयों की Demands को मंजूरी दे दी है।

The Delhi Appropriation (No. 2) Bill, 2024

(Bill No. 02 of 2024)

अब वित्त मंत्री The Delhi Appropriation (No. 2)

Bill, 2024 को House में Introduce करने की permission मांगेंगी।

Finance Minister: Hon'ble Speaker Sir, I seek permission of the House to introduce The Delhi Appropriation (No. 2) Bill, 2024 to the House

माननीय अध्यक्षः वित्त मंत्री जी का प्रस्ताव सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

प्रस्ताव पास हुआ।

माननीय अध्यक्षः अब माननीय वित्त मंत्री Bill को सदन में Introduce करेंगी।

Finance Minister: Hon'ble Speaker Sir, I introduce The Delhi Appropriation (No. 2) Bill, 2024 to the House.[3]

माननीय अध्यक्षः अब Bill पर Clause-wise विचार होगा।

प्रष्न है कि खण्ड-2, खण्ड-3 व Schedule बिल का अंग बनें-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

खण्ड-2, खण्ड-3 एवं Schedule बिल का अंग बन गये।

---

[3] दिल्ली विधन सभ पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23272 पर उपलब्ध।

दिल्ली विनियोजन (संख्या-2) विधेयक,

प्रश्न है कि खण्ड-1, Preamble और Title Bill का अंग बनें-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

खण्ड-1, Preamble और Title Bill का अंग बन गये।

माननीय अध्यक्षः अब माननीय वित्त मंत्री प्रस्ताव करेंगी कि The Delhi Appropriation (No. 2) Bill, 2024 को पास किया जाए।

Finance Minister: Hon'ble Speaker, Sir, the House may now please pass The Delhi Appropriation (No. 2) Bill, 2024

माननीय अध्यक्षः माननीय वित्त मंत्री जी का प्रस्ताव सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

The Delhi Appropriation (No. 2) Bill, 2024 पास हुआ।

सभी माननीय सदस्यों का बहुत–बहुत धन्यवाद। मैंने जैसे सदन में शुरुआत में कहा था आज जरनैल सिंह जी का जन्मदिन है, केक की व्यवस्था उन्होंने लंच में की है। मैं उनको जन्मदिन की, वो अबसेंट थे उस वक्त बधाई दे चुका हूं पुनः एक बार बधाई देता हूं। अब सदन की कार्यवाही शुक्रवार दिनांक 15 मार्च, 2024 को पूर्वाह्न 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है। एक बार बहुत–बहुत सभी माननीय सदस्यों का आभार धन्यवाद, सभी आमंत्रित हैं लंच पर।

(सदन की कार्यवाही शुक्रवार दिनांक 15 मार्च, 2024 पूर्वाह्न 11 बजे तक के लिए स्थगित की गई)

© दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी राज्यक्षेत्र शासन अधिनियम, 1991 की धारा 18 (2) के उपबंधों तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली विधान सभा प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियम 281 (2) के प्रावधानों के अंतर्गत प्रकाशित तथा ग्राफिक प्रिंटर्स, 2965 /41, बीडनपुरा, करोल बाग, नई दिल्ली-110 005 द्वारा मुद्रित।